भगवानश्रीकुन्दकुन्दकहान जैन शास्त्रमाला-पुष्प : १९३

श्री

रत्नत्रयविधान

卐

रचयिता :

कविवर पण्डित श्री टेकचन्दजी

卐

प्रकाशक :

श्री दिगम्बर जैन स्वाध्यायमन्दिर ट्रस्ट,

सोनगढ-364250

*

मूल्य : 10 रुपिये

प्रथम संस्करण : ३०००

वीर नि.सं. २५२३ वि.सं. २०५८ ई. स. १९९७

रयणत्तयसंजुत्तो जीवो वि हवेइ उत्तमं तित्थं ।
संसारं तरइ जदो रयणत्तयदिव्वणावाए ।।

कार्तिकेयानुप्रेक्षा--१९१

अर्थ :--यह जीव, रत्नत्रयरूप दिव्य नावसे, संसारसे तैर जाता है---संसारके पारको पा लेता है; अतः रत्नत्रयसे (सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्रकी एकता-रूप सुविशुद्ध निर्मल परिणतिसे) युक्त यह जीव ही उत्तम तीर्थ है ।

मुद्रक :
स्मृति ऑफसेट
सोनगढ़-364250
Phone : 244081

શ્રી દિગંબર જૈન સ્વાધ્યાયમંદિર ટ્રસ્ટ, સોનગઢ - ૩૬૪૨૫૦

अनुक्रमणिका

समुच्चय पूजा	३
श्री सम्यग्दर्शन पूजा	१०
श्री सम्यग्ज्ञान पूजा	३०
श्री सम्यक्चारित्र पूजा	५२
श्री समुच्चय जयमाला	८९
श्री रत्नत्रय व्रतकथा	९४

Shri Digambar Jain Swadhyay Mandir Trust, Songadh - 364250

असमग्रं भावयतो रत्नत्रयमस्ति कर्मबन्धो यः।
स विपक्षकृतोऽवश्यं मोक्षोपायो न बन्धनोपायः।।
रत्नत्रयमिह हेतुर्निर्वाणस्यैव भवति नान्यस्य।
आस्रवति यत्तु पुण्यं शुभोपयोगोऽयमपराधः।।

—स्वामी अमृतचन्द्रसूरि

अर्थ :—अपूर्ण रत्नत्रयकी भावनापरिणत साधकको जो कर्मबन्ध होता है वह अवश्य विपक्षकृत अर्थात् रागकृत है; क्योंकि रत्नत्रय तो मोक्षका उपाय है, बन्धका उपाय नहीं है ।

रत्नत्रय तो निर्वाणका ही हेतु है, नहीं कि अन्यका अर्थात् बन्धका । रत्नत्रयपरिणत साधकको जो पुण्यका आस्रव होता है सो तो शुभोपयोग है-अपराध है । अर्थात् ज्ञानीको जो पुण्यास्रव होता है वह तो शुभोपयोगरूप अपराधसे है, रत्नत्रयसे नहीं ।

શ્રી દિગંબર જૈન સ્વાધ્યાયમંદિર ટ્રસ્ટ, સોનગઢ - ૩૬૪૨૫૦

ॐ

कविवर पण्डित टेकचन्द विरचित

श्री रत्नत्रय विधान

(प्रस्तावना, वेसरी छन्द)

सरधो जानो पालो भाई, तीनों में कर राग जुदाई ।
लै लै नीका द्रव्य सुसारा, पूजे पाओ मोक्षागारा।।

(नाराच छन्द)

भला सुज्ञान-दर्शना-चरित्तरा सुसार है।
भवसमुद्रनाव मोक्ष-पंथ का अधार है।।

यही जु पंथ सिद्धि का, नहीं जु और जानिये।
जजों सुदर्श ज्ञान वा, चारित्र भक्ति आनिये।।

सार येहि तीन रत्न, पारखी मुनीन्द्र हैं।
लहें जु राज छांड़ि या, विना गुनी न सोह हैं।।

नहीं जु राग द्वेष ताहि, पाइये कदा सही।
तीन रत्नरूप वस्तु, चित्त में जिन्हों लही।।

मुनीन्द्र याहि पायके, न पाय फिर भवा सही।
जिनेन्द्र याहि पायके, प्रिया शिवा तिया गही।।

यही जु तीन मानका, जु मोक्षपंथ जानका।
यही जु ज्ञान केवला, निकट वेग आनका।।

Shri Digambar Jain Swadhyay Mandir Trust, Songadh - 364250

यही जु तीन रत्न इन्द्र, चन्द्र को नहीं मिलैं।
खगा फणीन्द्र चक्रि को, न भूप को धरा तलें॥

मुनी विना सराग के, न पाइये कभी सही।
जु तीन होय एकठे, जिनेन्द्र के गुणा यही॥

नमों जु ज्ञान दर्शना, चरित्र जो शिवा यथा।
रहे सदा हिये सुभक्ति, मो तनें इन्हीं कथा॥

भवान्तरे मिलैं सु मोहि, तीन रत्न आयके।
चाह और मोय ना, सुनो जु अर्ज ध्यायके॥

(गीतिका छन्द)

ये तीन रत्न अपार मौलिक, पारखी विरलो सही।
जिय मोह-अन्ध न भेद पावे, खेद जो बहुतौ लही॥

होवे निकट भव-अब्धि जाके, सो लहे सहजहिं भया।
मुनि होय राज्य विहाय पावे, शाश्वतो पद इन दया॥

इनही प्रभावै मोक्ष पावै, कर्म नाशै भवकरा।
सुख होय सब दुख खोय, सहजहिं स्वर्ग पावे मनहरा॥

ये ज्ञान सम्यक् दर्श चारित, तीन ही सुखदाय हैं।
इन धार जग में पूज्य पदवी, लहे जिन धुनि गाय हैं॥

(अडिल्ल छन्द)

रत्नत्रय भव हरे, स्वर्ग शिवदाय जी।
रत्नत्रयसम आभूषण, न दिखाय जी॥

શ્રી દિગંબર જૈન સ્વાધ્યાયમંદિર ટ્રસ્ટ, સોનગઢ - ૩૬૪૨૫૦

याकी महिमा देख, इन्द्र से पग परें।
ये त्रय ज्ञान बढ़ाय, सिद्धथल ले धरें॥

(चौपाई छन्द)

रत्नत्रय बिन भव भरमाय, रत्नत्रय तजि पाप कमाय।
अब हम उर वांछा यों भई, मिलै हितू रत्नत्रय सही॥

(सोरठा)

यह रत्नत्रय सार, शरण मिल्यो हमको सही।
भवदधि-तारनहार, तातें मैं पल पल नमों॥

(दोहा)

रत्नत्रय जग में कहा, मुक्ति महा फलदाय।
योग शुद्ध करके नमों, भवतति लेहुँ नशाय॥

❁

समुच्चय पूजा

(स्थापना, गीतिका छन्द)

सत्य दर्शन ज्ञान चारित, मोक्षमारग जिन कही।
मोक्षाभिलाषी धरें याको, इन बिना शिव ना लही॥
यों जानि तीनों रत्न पूजों, ध्याय के इसही धरा।
उर भक्ति धर मन वचन काया, ता फलें सब अघ हरा॥

ॐ ह्री श्रीसम्यग्दर्शनज्ञानचारित्ररूपरत्नत्रयधर्म ! अत्र अवतरावतर सम्वौषट् इत्याह्वाननम्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सतिहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्। परिपुष्पाञ्जलिं क्षिपामः।

Shri Digambar Jain Swadhyay Mandir Trust, Songadh - 364250

(चाल मुनियानन्दी)

नीर निरमल पदम, कुण्ड को सार जी।
उज्वलो क्षीर सम सरस या धार जी॥
रत्नझारी विषें, लेय गुण गाय के।
जजों दरशन सुज्ञान, वृत्त हरषाय के॥

ॐ ह्री श्रीसम्यग्दर्शनज्ञानचारित्रेभ्य: जलम्।

बावनों चन्दना, अगर शुभ लाइये।
नीर निरमल थकी, घसि चरचाइये॥
कनक पियाले विषें, धरि सुगुन गाय के।
जजों दरशन सुज्ञान, वृत्त हरषाय के॥

ॐ ह्री श्रीसम्यग्दर्शनज्ञानचारित्रेभ्य: सुगन्धम्।

श्वेत अक्षत सुभग, शुद्ध नख सिख सही।
गन्ध धर यों यथा, फूल कुन्दा कही॥
धार पातर विषें, आप कर लायके।
जजों दरशन सुज्ञान, वृत्त हरषाय के॥

ॐ ह्री श्रीसम्यग्दर्शनज्ञानचारित्रेभ्य: अक्षतम्।

फूल कल्पवृक्ष के, रंग नाना धरें।
गन्ध अपनी थकी, भ्रमर मन वश करें॥
पुष्प ऐसे तनी, माल कर लाय के।
जजों दरशन सुज्ञान, वृत्त हरषाय के॥

ॐ ह्री श्रीसम्यग्दर्शनज्ञानचारित्रेभ्य: पुष्पम्।

श्री दिगंबर जैन स्वाध्यायमंदिर ट्रस्ट, सोनगढ - ३६४२५०

सुभग नैवेद्य जो, भले रस धार जी।
सद्य मोदक घने, स्वाद करतार जी॥
यों चरु स्वर्ण के, पात्र धर लाय के।
जजों दरशन सुज्ञान, वृत्त हरषाय के॥

ॐ ह्री श्रीसम्यग्दर्शनज्ञानचारित्रेभ्य: नैवेद्यम्।

दीप मणिमय महा, ज्योतिकर्त्ता सही।
तेज ताके कने, ध्वान्त भागे सही॥
धार शुभ पात्र में, दीप कर लाय के।
जजों दरशन सुज्ञान, वृत्त हरषाय के॥

ॐ ह्री श्रीसम्यग्दर्शनज्ञानचारित्रेभ्य: दीपम्।

धूप दशधा महा, गन्धपूरित कही।
बहु चन्दनादि शुभ, द्रव्यसंयुत सही॥
लेय कर धूप यों, अगनि में लाय के।
जजों दरशन सुज्ञान, वृत्त हरषाय के॥

ॐ ह्री श्रीसम्यग्दर्शनज्ञानचारित्रेभ्य: धूपम्।

लोंग खारक भले, श्रीफला सार जी।
सुभग बादाम पुँगी, फलाधार जी॥
इन आदि लेय फल, आप कर लाय के।
जजों दरशन सुज्ञान, वृत्त हरषाय के॥

ॐ ह्री श्रीसम्यग्दर्शनज्ञानचारित्रेभ्य: फलम्।

नीर चन्दन अखत, फूल चरु जानिये।
दीप अरु धूप फल, अर्घ कर आनिये॥

Shri Digambar Jain Swadhyay Mandir Trust, Songadh - 364250

धारि उर भक्ति गुन, गाय सुख पाय के।
जजों दरशन सुज्ञान, वृत्त हरषाय के॥

ॐ ह्री श्रीसम्यग्दर्शनज्ञानचारित्रेभ्य: अर्घ्यम्।

दरश ज्ञान वृत्त ये, रत्न शुभ हैं सही।
यही तीन रत्न शिव, लोक की दें मही॥
जान यों अर्घ ले, आय उमगाय के।
जजों दरशन सुज्ञान, वृत्त हरषाय के॥

ॐ ह्री श्रीसम्यग्दर्शनज्ञानचारित्रेभ्य: महार्घ्यम्।

जयमाला

(दोहा)

तीन रत्न मुनिराज धन, अविनाशी बिन छेह।
इन्द्र स्तुतिवांछा करे, कवि मांगत है येह॥

(त्रिभंगी छन्द)

सम्यक् दृग जाके, हो शिव ताके,
दोष न वाके होय कदा।
सम्यक् सुध ज्ञानौ, हो भ्रम हानौ,
तत्त्व पिछानो, मोक्ष पदा॥
चारित शुध धारे, सम्यक् लारे,
भवदधि तारे, नाव जिसो।
यह तीनों रत्ना, कर इन यत्ना,
गुरुवच इतना, पूज तिसो॥

यह सम्यक् धारा, सब को प्यारा,
अध तैं न्यारा धर्म धरे।
शुध ज्ञान उपावा, सो शुध भावा,
शिवमग धावा, कर्म हरे॥
शुध चारित्र नीका, सुखदा जियका,
शिवतिय पियका, मीत जिसो।
यह तीनों रत्ना, कर इन यत्ना,
गुरुवच इतना पूज तिसो॥
तिस सम्यक् पाया, दोष उड़ाया,
जिनगुण गाया, ज्ञान धरं।
ले सम्यक् ज्ञानी, अमृत पानी,
भवतप हानी, पुष्ट करं॥
चारित भवसागर, नाव उजागर,
पार उतारन जान तिसो।
यह तीनों रत्ना, कर इन यत्ना,
गुरुवच इतना, पूज तिसो॥
सुध सम्यक् सारं, भव जिय धारं,
है भव तारं, सिद्ध थलं।
यह सम्यक् ज्ञानं, भ्रमतम हानं,
सब विध जानो, युक्तकलं॥
चारित शुध सोई, शिवमग जोई,
तारक जो हो, नाव जिसो।

यह तीनों रत्ना, कर इन यत्ना,
गुरुवच इतना, पूज तिसो॥
सम्यक् परभावा, नहिं भवदावा,
मरण मिटावा, सुखकारी।
जो सम्यग्ज्ञानी, दया-निधानी,
सब विध जानी, गुणधारी॥
सम्यक् चारित्ता, जग जिय मित्ता,
सज्जन चित्ता, मित्र जिसो।
यह तीनों रत्ना, कर इन जतना,
गुरुवच इतना, पूज तिसो॥
सम्यक् धन जाके, सुर नत वाके,
कमी न वाके धन धारी।
जे सम्यग्ज्ञानी, मिथ्याभानी,
ज्ञान पिछानी, सुखकारी॥
चारितधर जोगी, शिवतिय भोगी,
मोक्षनियोगी, जीव जिसो।
यह तीनों रत्ना, कर इन जतना,
गुरुवच इतना, पूज तिसो॥
सम्यक् शुध सो ही, लखे न मोही,
सत्य जु सो ही, कर्म हरे।
जिन भाषित ठाने, निज पर जाने,
सम्यग्ज्ञाने, सोहि धरे॥

શ્રી દિગંબર જૈન સ્વાધ્યાયમંદિર ટ્રસ્ટ, સોનગઢ - ૩૬૪૨૫૦

जो चारित धारे, कर्म निवारे,
आत्म सुधारे, ध्यान जिसो।
यह तीनों रतना, कर इन यत्ना,
गुरुवच इतना पूज तिसो॥
सम्यक् सरधाना, कुगुरु छुड़ाना,
बुध परधाना, मोक्ष चहा।
सो सम्यग्ज्ञानी, जिनध्वनि जानी,
सब विध मानी, और कहा॥
ते चारित धारी, निज अघहारी,
पुण्य भँडारी, जान जिसो।
यह तीनों रतना, कर इन यतना,
गुरुवच इतना, पूज तिसो॥

(दोहा)

सम्यग्दर्शन ज्ञान सह, चारित देहु मिलाय।
तीनों शिवमग जिन कहे, जो होते शिवदाय॥

ॐ ह्रीं श्रीसम्यग्दर्शनज्ञानचारित्रेभ्य: जयमालार्घ्यम्।

Shri Digambar Jain Swadhyay Mandir Trust, Songadh - 364250

श्री सम्यग्दर्शन पूजा

(अडिल्ल छन्द)

सम्यग्दर्शन सोय, जहां वसु मद नहीं,
शंकादिक वसु दोष, रहें जामें नहीं।
नहीं मूढता तीन, अनायत षट नहीं,
या विध समकित थाप, जजों शुभफल मही॥

ॐ ह्रीं श्री अष्टाङ्गसम्यग्दर्शन ! अत्र अवतर अवतर सम्वौषट्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः। अत्र मम सन्निहितं भव भव वषट् सन्निधिकरणम्। परिपुष्पाञ्जलिं क्षिपामः।

अष्टकम्

(गीतिका छन्द)

वर नीर सागर क्षीर जैसो,
उज्वलो सुखदाय जी।
शुभगन्ध निर्मल स्वाद याको,
सद्य शुद्ध सुल्याय जी॥
धरि रतनझारी हाथ ले निज,
भक्ति उर में बहु धरी।
मैं जजों सम्यक् दरस मल बिन,
भाव सों थुति उच्चरी॥

ॐ ह्रीं श्रीसम्यग्दर्शनाय जलम्।

बावनो चन्दन सुगन्ध सु,
नीर सँग घसि लाय हों।
शुभ अगर आदि मनोज्ञ गन्ध,
सु तास में मिलवाय हों॥
ले कनक पातर भाव शुभ तें,
भक्ति - धन लक्षहिं धरी।
मैं जजों सम्यक् दरस मल बिन,
भाव सों थुति उच्चरी॥

ॐ ह्रीं श्रीसम्यग्दर्शनाय चन्दनम्।

अक्षत अखण्डित बीन नख शिख,
शुद्ध उज्वल लाय जी।
शुभ गन्धमय अति धोय नीके,
आप कर सुखदाय जी॥
कर भले पातर मांहिं तिनको,
भक्ति शुभ फलदा करी।
मैं जजों सम्यक् दरस मल बिन,
भाव सों थुति उच्चरी॥

ॐ ह्रीं श्रीसम्यग्दर्शनाय अक्षतम्।

फूल शुभ वर ये वरन नाना,
जाति हू बहुविध सही।
अतिगन्ध युत सुरवृक्ष के शुभ,
जाय उपमा ना कही॥

कर माल तिनकी हाथ ले निज,
भावना सुध उर धरी।
मैं जजों सम्यक् दरस मल बिन,
भाव सों थुति उच्चरी॥

ॐ ह्रीं श्रीसम्यग्दर्शनाय पुष्पम्।

नैवेद्य मोदक आदि नीके,
और भी बहुविध कही।
तिन माँहि नाना मेल रस को,
स्वाद की मानो मही॥
चरु करी या विध धारि पातर,
भक्ति मन वच तन धरी।
मैं जजों सम्यक् दरस मल बिन,
भाव सों थुति उच्चरी॥

ॐ ह्रीं श्रीसम्यग्दर्शनाय नैवेद्यम्।

कर दीप मणिमय ज्योति धारी,
नाश कर तम को सही।
धर मध्य पातर हेम के शुभ,
आरती करनी चही॥
उर भक्ति मन वच काय धरि करि,
विनय तें मुख थुति करी।
मैं जजों सम्यक् दरस मल बिन,
भाव सों थुति उच्चरी॥

ॐ ह्रीं श्रीसम्यग्दर्शनाय दीपम्।

धूप दशधा द्रव्य लेके,
करी है सुखकार जी।
तिस माँहि गन्ध अपार प्रसरत,
भ्रमर शब्द उचार जी॥
इस जाति की शुभ धूप लेकर,
अग्नि में थुति कर धरी।
मैं जजों सम्यक् दरस मल बिन,
भाव सों थुति उच्चरी॥

ॐ ह्रीं श्रीसम्यग्दर्शनाय धूपम्।

श्रीफल सुपारी लौंग खारक,
चोच मोच बदाम जी।
इन आदि और अनेक फल ले,
महा शुभ के धाम जी॥
ले भक्ति कर धर सुभग बासन,
आपने कर ले धरी।
मैं जजों सम्यक् दरस मल बिन,
भाव सों थुति उच्चरी॥

ॐ ह्रीं श्रीसम्यग्दर्शनाय फलम्।

जल गन्ध अक्षत पुष्प चरु ले,
दीप धूप सु फल सही।
सब मेल अर्घ बनाय नीको,
भले पातर में लही॥

उर भक्ति मन वच काय करके,
एक ध्यान सु तैं करी।
मैं जजों सम्यक् दरस मल बिन,
भाव सों थुति उच्चरी॥

ॐ ह्रीं श्रीसम्यग्दर्शनाय अर्घ्यम्।

प्रत्येक अर्घ

(त्रिभंगी छन्द)

मम नाना मामा, अतिबल ठामा,
धन के धामा, सुखदाई।
तिन राज सुमानें, सब जग जानें,
वचन प्रमानें, सब भाई॥
यह 'जाति' सुमद्दा, जानि निषिद्दा,
अघ की हद्दा, जान हिये।
याको जु निवारे, सम्यक् सारे,
शिवपद धारे, जजि थुति ये॥

ॐ ह्रीं जातिमदरहिताय सम्यग्दर्शनाय अर्घ्यम्।

है बाप हमारा, सुत धन वारा,
सब को प्यारा ज्ञानमई।
सुत दारा मेरा, नृप ढिग केरा,
काम करेरा, जान सई।
यह 'कुलमद' जानो, अघ को थानो,
तज वच मानो, बात हिये।

सम्यक् या बिन सो, मोक्ष करन सो,
जजि भवि मन सों, भक्ति दिये॥

ॐ ह्रीं कुलमदरहिताय सम्यग्दर्शनाय अर्घ्यम्।

मैं बहुत कमाऊँ, द्रव्य उपाऊँ,
सब दिशि जाऊँ, खेप लई।
मो में बुध नीकी, वनज करे की,
युक्ति धरे की, बात सई॥
जँह ही मैं जाऊँ, आदर पाऊँ,
नव-निधि लाऊँ, जान हिये।
यह 'धन' का मद्दा, जान निषिद्दा,
सम्यक् शुद्धा, जजि थुति ये॥

ॐ ह्रीं धनमदरहिताय सम्यग्दर्शनाय अर्घ्यम्।

जो रूप हमारो, और न धारो,
मोसे हारो मदन जिसो।
सुर हू लखि लज्जै, यों छबि छज्जै,
बहु कहा कहिज्जे, जान इसो॥
यह 'रूप मदा' है, ज्ञान जुदा है,
सम्यक् दाहै, आप मई।
तज याको भाई, जजि थुति लाई,
सम्यक् पाई, मोक्ष सई॥

ॐ ह्रीं रूपमदरहिताय सम्यग्दर्शनाय अर्घ्यम्।

मैं तपसी भारी, शक्ति अपारी,
वास धरारी, बरष मई।
चंचल मन जीत्या, भवभय भीत्या,
नहिं तन मीत्या, जान भई॥
यह 'तपमद' जानो, अघ को थानो,
दोष बढ़ानो, कर हानी।
सम्यक् सुध सोई, जजि अघ खोई,
जिन ध्वनि जोई, मुनि मानी॥

ॐ ह्रीं तपोमदरहिताय सम्यग्दर्शनाय अर्घ्यम्।

हम बहु बलवाना, मल्ल समाना,
गजमद हाना, जोध सही।
मेरे बल आगे, अरिभय भागे,
को मो आगे, धीर कही॥
यह 'बल' को मद है, अघ को हद है,
सब हित रद है, करि हानी।
सम्यक् सुध सोई, जजि अघ खोई,
जिनध्वनि जोई, मुनि मानी॥

ॐ ह्रीं बलमदरहिताय सम्यग्दर्शनाय अर्घ्यम्।

मैं बहु श्रुत जोई, भरम न कोई,
चर्चा जोई, बात करो।
मैं षट् मत जोये, पंडित टोये,
सब मत धोये, ज्ञान धरों॥

શ્રી દિગંબર જૈન સ્વાધ્યાયમંદિર ટ્રસ્ટ, સોનગઢ - ૩૬૪૨૫૦

'विद्यामद' ये ही, तजि भवि जेही,
सरधा ये ही जिनवानी।
सम्यक् सुध सोई, जजि अघ खोई,
जिनध्वनि जोई, मुनी मानी॥

ॐ ह्रीं विद्यामदरहिताय सम्यग्दर्शनाय अर्घ्यम्।

मो कों नृप जानें, मुखिया माने,
जग सन्माने, हुकम घनों।
चाहों मैं मारों, तथा उगारों,
वचन उचारों सोइ ठनों॥
यह मद 'अधिकारी' तज भयधारी,
भाव सम्हारी, धुनि ठानी।
सम्यक् सुध सोई, जजि अघ खोई,
जिनध्वनि जोई, मुनि मानी॥

ॐ ह्रीं अधिकारमदरहिताय सम्यग्दर्शनाय अर्घ्यम्।

जँह शंका आवे, धरम नशावे,
पाप बढ़ावे, दुखदाई।
शंका जब होई, सम्यक् खोई,
सरधा वोई, मनलोई॥
यह 'शंका' मल है, फल अतिखल है,
त्याग सु-कल है, मन आनी।
सम्यक् सुध सोई, जजि अघ खोई,
जिनध्वनि जोई, मुनि मानी॥

ॐ ह्रीं शंकामलरहिताय सम्यग्दर्शनाय अर्घ्यम्।

Shri Digambar Jain Swadhyay Mandir Trust, Songadh - 364250

जो वृष-रस चाखे, फल अभिलाखे,
जगसुख भाखे, मोहि मिले।
मैं जिनवृष सेऊँ, खगथल लेऊँ,
सुरसुख सेऊँ, चाह फले॥
यह वाञ्छा जानो, 'कांछा' मानो,
तज वच आनो, जिनवानी।
सम्यक् सुध सोई, जजि अघ खोई,
जिनध्वनि जोई, मुनि मानी॥

ॐ ह्रीं कांक्षामलरहिताय सम्यग्दर्शनाय अर्घ्यम्।

पर वस्तु सु जोवे, घिन चित बोवे,
अरति बढ़ोवे, मन मांही।
यह वस्तु बुरी है, क्यों जु घरी है,
कौन करी है, दुखदाई॥
यह दोष 'विचिकित्सा', अघ को अंशा,
त्यागो मनसा, श्रुतज्ञानी।
सम्यक् सुध सोई, जजि अघ खोई,
जिनध्वनि जोई, मुनि मानी॥

ॐ ह्रीं विचिकित्सामलरहिताय सम्यग्दर्शनाय अर्घ्यम्।

जो भेद न पावे, शीश नवावे,
भक्ति बढ़ावे, देव कही।
सब को गुरु माने, ज्ञान न आने,
धर्म न जाने, शुद्ध सही॥

શ્રી દિગંબર જૈન સ્વાધ્યાયમંદિર ટ્રસ્ટ, સોનગઢ - ૩૬૪૨૫૦

यह मूढ़ स्वभावा, पाप बढ़ावा,
तज सुख दावा, मन आनी॥
सम्यक् सुध सोई, जजि अघ खोई,
जिनध्वनि जोई, मुनि मानी॥

ॐ ह्रीं मूढ़तामलरहिताय सम्यग्दर्शनाय अर्घ्यम्।

पर अवगुण जोई, ढकै न सोई,
मुख कह कोई, पाप धरा।
पर के छल देखे, कहत विशेखे,
सो अघ भेखे, जान खरा॥
कह दोष पराया, यह अघ भाया,
त्याग सुभाया, बुध आनी।
सम्यक् सुध सोई, जजि अघ खोई,
जिनध्वनि जोई, मुनि मानी॥

ॐ ह्रीं अनुपगूहनमलरहिताय सम्यग्दर्शनाय अर्घ्यम्।

लख धर्म पराया, दोष बढ़ाया,
पाप उपाया, मन ल्याई।
या धर्म बढ़ाऊँ, सो विधि लाऊँ,
ज्ञान बढ़ाऊँ, चित ल्याई॥
यह अवगुण जानो, अतिथि सुमानो,
तजि हित आनो, शुभ जानी।
सम्यक् सुध सोई, जजि अघ खोई,
जिनध्वनि जोई, मुनि मानी॥

ॐ ह्रीं अस्थितिकरणमलरहिताय सम्यग्दर्शनाय अर्घ्यम्।

Shri Digambar Jain Swadhyay Mandir Trust, Songadh - 364250

धर्मी जन जोवे, हरष न होवे,
समचित सोवे, अघ धारी।
वृषथान निहारे, नेह न धारे,
सकति सम्हारे, अधिकारी॥
यह वत्सल नाहीं, पाप बढ़ाई,
तज मन लाई, बुध आनी।
सम्यक् सुध सोई, जजि अघ खोई,
जिनध्वनि जोई, मुनि मानी॥

ॐ ह्रीं अवात्सल्यमलरहिताय सम्यग्दर्शनाय अर्घ्यम्।

उत्सव नहि जाने, हरष न आने,
नाहिं सुहाने, मम मांहीं।
नहिं ताहि सरावे, जस नहिं गावे,
पाप कमावे, चित्त ठांहीं॥
यह दोष बड़ा है, त्याग जुड़ा है,
धर्म बड़ा है, मन आनी।
सम्यक् सुध सोई, जजि अघ खोई,
जिनध्वनि जोई, मुनि मानी॥

ॐ ह्रीं अप्रभावनामलरहिताय सम्यग्दर्शनाय अर्घ्यम्।

(चौपाई छन्द)

ना सर्वज्ञ न तारनहार,
ताको पूजत देव निहार।
सो यह देवमूढ़ता जोय,
इस बिन जजि सुध समकित सोय॥

શ્રી દિગંબર જૈન સ્વાધ્યાયમંદિર ટ્રસ્ટ, સોનગઢ - ૩૬૪૨૫૦

ॐ ह्रीं देवमूढ़तारहिताय सम्यग्दर्शनाय अर्घ्यम्।

धर्म दया बिन सो है सही,
धारण करै परीक्षा नहीं।
सो यह धर्ममूढ़ता सोय,
इस बिन जजि सुध समकित सोय॥

ॐ ह्रीं धर्ममूढ़तारहिताय सम्यग्दर्शनाय अर्घ्यम्।

वीतराग नहिं नगन शरीर,
सेवे कुगुरु राग धर धीर।
सो यह गुरुमूढ़ता सोय,
इस बिन जजि सुध समकित सोय॥

ॐ ह्रीं गुरुमूढ़तारहिताय सम्यग्दर्शनाय अर्घ्यम्।

कर्मनाश बिन देव कहाय,
तिनको परशंसै थुति लाय।
यह अनायतन दोष सुजोय,
इस बिन जजि सुध समकित सोय॥

ॐ ह्रीं कुदेवप्रशंसानायतनदोषरहिताय सम्यग्दर्शनाय अर्घ्यम्।

ताहि कुदेव सेवक हू जान,
परशंसै मन में हित आन।
यह अनायतन दोष जु होय,
इस बिन जजि सुध समकित सोय॥

ॐ ह्रीं कुदेवसेवकप्रशंसानायतनदोषरहिताय सम्यग्दर्शनाय अर्घ्यम्।

Shri Digambar Jain Swadhyay Mandir Trust, Songadh - 364250

શ્રી દિગંબર જૈન સ્વાધ્યાયમંદિર ટ્રસ્ટ, સોનગઢ - ૩૬૪૨૫૦

दयारहित ही धर्म सु मान,
फिर ताकी परशंसा ठान।
यह अनायतन दोष जु होय,
इस बिन जजि सुध समकित सोय॥

ॐ ह्रीं कुधर्मप्रशंसानायतनदोषरहिताय सम्यग्दर्शनाय अर्घ्यम्।

हिंसाधर्म सेवकी जान,
ताको परशंसै शुभ मान।
यह अनायतन दोष जु होय,
इस बिन जजि सुध समकित सोय॥

ॐ ह्रीं कुधर्मसेवकप्रशंसानायतनदोषरहिताय सम्यग्दर्शनाय अर्घ्यम्।

राग द्वेष धर प्रज्ञावान,
ये गुरु परशंसै बिन ज्ञान।
यह अनायतन दोष जु होय,
इस बिन जजि सुध समकित सोय॥

ॐ ह्रीं कुगुरुप्रशंसानायतनदोषरहिताय सम्यग्दर्शनाय अर्घ्यम्।

कुगुरुन की सेवा जो करे,
ताकी परशंसा चित्त धरे।
यह अनायतन दोष जु होय,
इस बिन जजि सुध समकित सोय॥

ॐ ह्रीं कुगुरुसेवकप्रशंसानायतनदोषरहिताय सम्यग्दर्शनाय अर्घ्यम्।

यह द्यूत व्यसन है पापमूल,
यह खेल लहे जिय दुःखशूल।

Shri Digambar Jain Swadhyay Mandir Trust, Songadh - 364250

શ્રી દિગંબર જૈન સ્વાધ્યાયમંદિર ટ્રસ્ટ, સોનગઢ - ૩૬૪૨૫૦

दे अपयश वध बन्धन सु जोय,
इस बिन जजि सुध समकित सोय॥

ॐ ह्रीं द्यूतव्यसनरहिताय सम्यग्दर्शनाय अर्घ्यम्।

आमिष खाये मन अशुचिवान,
हिंसा या सम होवे न आन।
तिस देखत ही मन मलिन होय,
इस बिन जजि सुध सम्यक्त्व सोय॥

ॐ ह्रीं आमिषव्यसनरहिताय सम्यग्दर्शनाय अर्घ्यम्।

पीके मदिरा मूर्च्छा लहाय,
सब सुध बुध अपनी दे गमाय।
यह मदिरा व्यसन सुधर्म खोय,
इस बिन जजि सुध सम्यक्त्व सोय॥

ॐ ह्रीं मदिराव्यसनरहिताय सम्यग्दर्शनाय अर्घ्यम्।

गणिका गिन पातल झूंठ जेम,
अति लोकनिंद्य परसिद्ध येम।
यह व्यसन नरकपद दाय जोय,
इस बिन जजि सुध सम्यक्त्व सोय॥

ॐ ह्रीं गणिकाव्यसनरहिताय सम्यग्दर्शनाय अर्घ्यम्।

जे जीव घास खा वन वसांय,
तिनको मारें पारधि कुभाय।
यह व्यसन नरक मारग सुजोय,
इस बिन जजि सुध सम्यक्त्व सोय॥

ॐ ह्रीं आखेटव्यसनरहिताय सम्यग्दर्शनाय अर्घ्यम्।

Shri Digambar Jain Swadhyay Mandir Trust, Songadh - 364250

परद्रव्य हरें दुठ चोर जान,
लहि वध बन्धन जगनिंद्य थान।
यह चौर्यव्यसन दुखदाय जोय,
इस बिन जजि सुध सम्यक्त्व सोय॥

ॐ ह्रीं चौर्यव्यसनरहिताय सम्यग्दर्शनाय अर्घ्यम्।

परनारि व्यसन दुठ जीव धार,
सो लहें नरकदुख पापभार।
यह व्यसन महादुखदाय जोय,
इस बिन जजि सुध सम्यक्त्व सोय॥

ॐ ह्रीं परनारिव्यसनरहिताय सम्यग्दर्शनाय अर्घ्यम्।

(चौपाई छन्द)

किये दान संक्रान्ति सुजान,
होय सुखी नाहीं दुख मान।
ऐसो भरम जहां नहिं होय,
इस विध जजि सुध समकित सोय॥

ॐ ह्रीं कुपर्वदानदोषरहिताय सम्यग्दर्शनाय अर्घ्यम्।

ग्रह पूजें सुख साता मान,
नहिं पूजें दुखकूप बखान।
ऐसो भरम जहां नहिं होय,
इस विध जजि सुध समकित सोय॥

ॐ ह्रीं चन्द्रसूर्यादिग्रहपूजारहिताय सम्यग्दर्शनाय अर्घ्यम्।

पूजें भूमी भूपति थाय,
इस विधि मिथ्याभाव उपाय।
ऐसो भरम जहां नहिं होय,
इस विध जजि सुध समकित सोय॥

ॐ ह्रीं भूमिपूजारहिताय सम्यग्दर्शनाय अर्घ्यम्।

हिंसागम जो सेव कराय,
वैदिक मंत्र जंत्र पुजवाय।
ऐसो भरम जहां नहिं होय,
इस विध जजि सुध समकित सोय॥

ॐ ह्रीं कुधर्मसेवारहिताय सम्यग्दर्शनाय अर्घ्यम्।

पर्वत पूजें दीरघ जान,
जाके जजें हो हित मान।
ऐसो भरम जहां नहिं होय,
इस विध जजि सुध समकित सोय॥

ॐ ह्रीं पर्वतादिपूजारहिताय सम्यग्दर्शनाय अर्घ्यम्।

उदधि नदी सपरें अघ जाय,
होय पुण्य जिय को सुखदाय।
ऐसो भरम जहां नहिं होय,
इस विध जजि सुध समकित सोय॥

ॐ ह्रीं उदधिनदीस्नानरहिताय सम्यग्दर्शनाय अर्घ्यम्।

अग्नि मांहि, जीवित जर जांय,
देवपना वे जीव लहांय।

ऐसो भरम जहां नहिं होय,
इस विध जजि सुध समकित सोय॥

ॐ ह्रीं अग्निपातरहिताय सम्यग्दर्शनाय अर्घ्यम्।

कुगुरु सेवतें साता पाय,
यह दे ऋद्धि परम सुखदाय।
ऐसो भरम जहां नहिं होय,
इस विध जजि सुध समकित सोय॥

ॐ ह्रीं कुगुरुसेवारहिताय सम्यग्दर्शनाय अर्घ्यम्।

अग्निदेव कर मानें सही,
पूजें दीपक है शुभ कही।
ऐसो भरम जहां नहिं होय,
इस विध जजि सुध समकित सोय॥

ॐ ह्रीं अग्निसेवारहिताय सम्यग्दर्शनाय अर्घ्यम्।

गायमूत्र अतिपूत बताय,
या लागे तन निर्मल थाय।
ऐसो भरम जहां नहिं होय,
इस विध जजि सुध समकित सोय॥

ॐ ह्रीं गोमूत्रसेवारहिताय सम्यग्दर्शनाय अर्घ्यम्।

गज घोटक वृष सेव कराय,
इन सेवें इन लाभ बताय।
ऐसो भरम जहां नहिं होय,
इस विध जजि सुध समकित सोय॥

ॐ ह्रीं वाहनसेवारहिताय सम्यग्दर्शनाय अर्घ्यम्।

શ્રી દિગંબર જૈન સ્વાધ્યાયમંદિર ટ્રસ્ટ, સોનગઢ - ૩૬૪૨૫૦

असि बरछी भाला बन्दूक,
पूजें शक्ति लहे ना चूक।
ऐसो भरम जहां नहिं होय,
इस विध जजि सुध समकित सोय॥

ॐ ह्रीं शस्त्रपूजारहिताय सम्यग्दर्शनाय अर्घ्यम्।

बालक पूजें देव सु मान,
सो सब मिथ्यामत श्रीमान।
ऐसो भरम जहां नहिं होय,
इस विध जजि सुध समकित सोय॥

ॐ ह्रीं बालकपूजारहिताय सम्यग्दर्शनाय अर्घ्यम्।

गिरि तें पड़तो काय छुड़ाय,
तो वांछितसुख को जन पाय।
ऐसो भरम जहां नहिं होय,
इस विध जजि सुध समकित सोय॥

ॐ ह्रीं गिरिपतनरहिताय सम्यग्दर्शनाय अर्घ्यम्।

हिंसकदेव दया बिन जान,
देखत क्रूर जजें सुख मान।
ऐसो भरम जहां नहिं होय,
इस विध जजि सुध समकित सोय॥

ॐ ह्रीं हिंसकदेवसेवारहिताय सम्यग्दर्शनाय अर्घ्यम्।

Shri Digambar Jain Swadhyay Mandir Trust, Songadh - 364250

निशा अहार करै नहिं जोय,
जाके उर करुणा बहु होय।
मांसाहारी निशि को खाय,
या विन जजि सुध समकित भाय॥

ॐ ह्रीं निशाहाररहिताय सम्यग्दर्शनाय अर्घ्यम्।

अनगाल्यो जल पीवे नांहि,
दयासहित उर धर्म सुभाय।
ऐसो गुन ताके बहु होय,
सो समकित पूजें सुख होय॥

ॐ ह्रीं अगालितजलपानरहिताय सम्यग्दर्शनाय अर्घ्यम्।

इत्यादिक गुणजुत जो होय,
कहे दोष ते एक न जोय।
निश्चय अरु व्यवहार सुभाय,
सो समकित पूजों थुति लाय॥

ॐ ह्रीं सर्वदोषरहिताय शुद्धसम्यग्दर्शनाय महार्घ्यम्।

जयमाला

समकित सांचा धर्म है, मोक्षवृक्ष का मूल।
श्रद्धा करना गाढ़ उर, हरे विषय अघ शूल॥

(वेसरी छन्द)

समकित सार धर्म का बीजा,
यातै पापमैल सब छीजा।

શ્રી દિગંબર જૈન સ્વાધ્યાયમંદિર ટ્રસ્ટ, સોનગઢ - ૩૬૪૨૫૦

याही तें जगपूज्य कहावे,
यो ही जामनमरण मिटावे॥

समकित सा नाहीं धन कोई,
समकित कल्पवृक्ष सम होई।
समकित के गुण मुनिगण गावें,
समकित जामनमरण मिटावे॥

समकित ही सब कारज सारे,
समकित मिथ्यारोग निवारे।
समकित शुद्ध धर्म कहलावे,
समकित जामनमरण मिटावे॥

समकित रतन जास तन मांहीं,
तासम आभूषण जग नाहीं।
समकित सुर-शिव थान दिखावे,
समकित जामनमरण मिटावे॥

समकित बिन मुनि को शिव नाहीं,
समकित सहित जीव शिव पाहीं।
समकित देव धर्म बतलावे,
समकित जामनमरण मिटावे॥

समकित-अग्नि कर्म नित जारे,
समकित मोहमल्लको मारे।
समकित ही भ्रम दूर हटावे,
समकित जामनमरण मिटावे॥

Shri Digambar Jain Swadhyay Mandir Trust, Songadh - 364250

समकित तें हरि को पद होई,
समकितफल अहमिन्द्र सु होई।
समकित सहित मुक्तिपद पावे,
समकित जामनमरण मिटावे॥

(दोहा)

समकित मेरे शीश पर, करो वास यह आश।
समकित ही गुण मुख रहे, जब तक तन में स्वास॥

ॐ ह्रीं अष्टांगसम्यग्दर्शनाय जयमालार्घ्यम्।

श्री सम्यग्ज्ञान पूजा

(चौपाई छन्द)

मति श्रुत अवधि ज्ञान मन लाय।
मनपर्यय केवल समझाय॥
ये ही पांचों सम्यग्ज्ञान।
पूजों थाप यहां हित आन॥

ॐ ह्रीं श्रीसम्यग्ज्ञान ! अत्र अवतर अवतर सम्वौषट्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः। अत्र मम सतिहितं भव भव वषट् सतिधिकरणम्।

(भुजङ्गाप्रयात छन्द)

लिया नीर चोखा, पदम कुण्ड केरा।
महा निर्मला गंध, जुत भर्म हेरा॥

શ્રી દિગંબર જૈન સ્વાધ્યાયમંદિર ટ્રસ્ટ, સોનગઢ - ૩૬૪૨૫૦

भर्यो स्वर्ण झारी, घनी भक्ति लाई।
जजों ज्ञान सम्यक्, घना सौख्यदाई॥

ॐ ह्रीं श्रीसम्यग्ज्ञानाय जलम्।

भला गंध धारी, लिया चन्दना है।
घिसा नीर से फेर, कर वन्दना है॥
धरी भक्ति उर में, भले पात्र लाई।
जजों ज्ञान सम्यक्, घना सौख्य दाई॥

ॐ ह्रीं श्रीसम्यग्ज्ञानाय चन्दनम्।

भले तन्दुला ऊजरे खंड नाहीं।
धरें गन्ध नीकी भली शोभ मांहीं॥
लिये हाथ अपने घनी भक्ति लाई।
जजों ज्ञान सम्यक्, घना सौख्य दाई॥

ॐ ह्रीं श्रीसम्यग्ज्ञानाय अक्षतम्।

भले गंधयुत फूल ले माल कीनी।
घने वर्ण के कोमला भक्ति चीनी॥
धरे हाथ मांही भली भक्ति गाई।
जजों ज्ञान सम्यक, घना सौख्य दाई॥

ॐ ह्रीं श्रीसम्यग्ज्ञानाय पुष्पम्।

नैवेद्य नीका हितू जान जिय का।
भले मोदकादी रस डारि नीका॥
धरे पात्र में हाथ ले भक्ति गाई।
जजों ज्ञान सम्यक्, घना सौख्य दाई॥

ॐ ह्रीं श्रीसम्यग्ज्ञानाय नैवेद्यम्।

Shri Digambar Jain Swadhyay Mandir Trust, Songadh - 364250

करे दीप तम नाश शुभ रत्न केरा।
धरे थाल माँही खुशी चित्त मेरा॥
करी आरती हर्ष सह भक्ति गाई।
जजों ज्ञान सम्यक्, घना सौख्य दाई॥

ॐ ह्रीं श्रीसम्यग्ज्ञानाय दीपम्।

धरी धूप दशधा भली गन्ध धारी।
लिये चन्दनागुरु सुगन्धी है भारी॥
करों वीनती अग्नि में खेय भाई।
जजों ज्ञान सम्यक्, घना सौख्य दाई॥

ॐ ह्रीं श्रीसम्यग्ज्ञानाय धूपम्।

लिये श्रीफल लौंग खारक बदामा।
इन्हें आदि फल और बहु जान कामा॥
धरे पात्र मांही घनी भक्ति लाई।
जजों ज्ञान सम्यक्, घना सौख्य दाई॥

ॐ ह्रीं श्रीसम्यग्ज्ञानाय फलम्।

लिया नीर चन्दन अखत पुष्प जानो।
नैवेद्य फल दीप अरु धूप मानो॥
करों अर्घ सुन्दर घनी भक्ति गाई।
जजों ज्ञान सम्यक्, घना सौख्य दाई॥

ॐ ह्रीं श्रीसम्यग्ज्ञानाय अर्घ्यम्।

प्रत्येकार्घ

(वेसरी छन्द)

सपरस इन्द्रिय तें सब जाने।
विषय आठ ताकी विधि माने॥
सम्यक् सहित ज्ञान जो होई।
सो मतिज्ञान जजों मद खोई॥

ॐ ह्रीं स्पर्शनेन्द्रियद्वारसम्यग्ज्ञानाय अर्घ्यम्।

रसना तें जो विषय पिछाने।
पांच भेद सब अंश सु आने॥
सम्यक् सहित ज्ञान जो होई।
सो मतिज्ञान जजों मद खोई॥

ॐ ह्रीं रसनेन्द्रियद्वारसम्यग्ज्ञानाय अर्घ्यम्।

घ्राणेन्द्रिय जाने जो भाई।
दोय भेद ताकी विधि गाई॥
सम्यक् सहित ज्ञान जो होई।
सो मतिज्ञान जजों मद खोई॥

ॐ ह्रीं घ्राणेन्द्रियद्वारसम्यग्ज्ञानाय अर्घ्यम्।

चक्षू विषय पञ्च विध जाने।
लाल पीत श्यामादिक माने॥
सम्यक् सहित ज्ञान तें होई।
सो मतिज्ञान जजों मद खोई॥

ॐ ह्रीं नेत्रेन्द्रियद्वारसम्यग्ज्ञानाय अर्घ्यम्।

श्रोत्रेन्द्रिय तो शब्द पिछाने।
तीन भेद ताके पहिचाने॥
सम्यक् सहित ज्ञान तें होई।
सो मतिज्ञान जजों मद खोई॥

ॐ ह्रीं श्रोत्रेन्द्रियद्वारसम्यग्ज्ञानाय अर्घ्यम्।

जो जो मन विकल्प तें जोवे।
भई होयगी अब जो होवे॥
सम्यक् सहित ज्ञान तें होई।
सो मतिज्ञान जजों मद खोई॥

ॐ ह्रीं मनोद्वारसम्यग्ज्ञानाय अर्घ्यम्।

(चौपाई छन्द)

ग्यारह अँग पूर्वादि सु जान।
अंग बारहों सुरत वखान॥
ये सब सम्यक् सहित सुभाय।
सो श्रुतज्ञान जजों हर्षाय॥

ॐ ह्रीं श्रीअंगपूर्वादिश्रुतज्ञानाय अर्घ्यम्।

खावै जतन जतन तें चले।
बोले जतन जतन तें हले॥
आचारांग क्रिया यों कही।
सो श्रुत सम्यक् पूजों सही॥

ॐ ह्रीं श्रीआचाराङ्गश्रुतज्ञानाय अर्घ्यम्।

अध्ययन विधि विनयादिक और।
निज परिणति वेदन जग मौर॥

सूत्रकृतांग विषैं यों कही।
सो श्रुत सम्यक् पूजों सही॥

ॐ ह्रीं श्रीसूत्रकृताङ्गश्रुतज्ञानाय अर्घ्यम्।

जीव थान उन्नीस बताये।
तथा चार सौ षट् श्रुत गाये॥
अंग स्थान मांहि यों कही।
सो श्रुत सम्यक् पूजों सही॥

ॐ ह्रीं श्रीस्थानाङ्गश्रुतज्ञानाय अर्घ्यम्।

होवे जो जो धर्म समान।
द्रव्य क्षेत्र कालादिक मान॥
समवायाङ्ग यथाविधि कही।
सो श्रुत सम्यक् पूजों सही॥

ॐ ह्रीं श्रीसमवायाङ्गश्रुतज्ञानाय अर्घ्यम्।

अस्ति नास्ति आदिक स्याद्वाद।
एकानेक करे जो वाद॥
व्याख्याप्रज्ञप्ति अंग यों कही।
सो श्रुत सम्यक् पूजों सही॥

ॐ ह्रीं श्रीव्याख्याप्रज्ञप्तिश्रुतज्ञानाय अर्घ्यम्।

जिन अतिशय जिनध्वनि प्रगटाय।
समवसरण आदिक गुण गाय॥
ज्ञातृकथा अँग में यों कही।
सो श्रुत सम्यक् पूजों सही॥

ॐ ह्रीं श्रीज्ञातृकथाश्रुतज्ञानाय अर्घ्यम्।

श्री दिगंबर जैन स्वाध्यायमंदिर ट्रस्ट, सोनगढ - ३६४२५०

एकादश प्रतिमा विधि जोय।
और बहुत श्रावक विधि होय॥
अँग उपासक में यों कही।
सो श्रुत सम्यक् पूजों सही॥

ॐ ह्रीं श्रीउपासकाध्ययनांगश्रुतज्ञानाय अर्घ्यम्।

एक एक जिनसमय मँझार।
अन्तःकृत केवलि षट् (10) चार॥
अन्तकृतांग मांहि यों कही।
सो श्रुत सम्यक् पूजों सही॥

ॐ ह्रीं श्रीअन्तःकृतदशाङ्गश्रुतज्ञानाय अर्घ्यम्।

एक एक जिन वारें सोय।
दश दश मुनि अहमिन्द्र जु होंय॥
अंग अनुत्तर में यों कही।
सो श्रुत सम्यक् पूजों सही॥

ॐ ह्रीं श्रीअनुत्तरोपपादिकदशाङ्गश्रुतज्ञानाय अर्घ्यम्।

गई वस्तु लिख मूठी मांहि।
पूंछे प्रश्न कहें मुनि ठांहि॥
प्रश्न व्याकरण अंग यों कही।
सो श्रुत सम्यक् पूजों सही॥

ॐ ह्रीं श्रीप्रश्नव्याकरणांगश्रुतज्ञानाय अर्घ्यम्।

शुभ अरु अशुभ कर्मफल जान।
तीव्र जु मन्द विपाक बखान॥

श्री दिगंबर जैन स्वाध्यायमंदिर ट्रस्ट, सोनगढ - ३६४२५०

सूत्रविपाक अंग यों कही।
सो श्रुत सम्यक् पूजों सही॥

ॐ ह्रीं श्रीविपाकसूत्राङ्गश्रुतज्ञानाय अर्घ्यम्।

(अडिल्ल छन्द)

व्यय ध्रौव्य अरु उत्पाद, द्रव्य लक्षण सही।
गुण पर्य्यय द्रव्य मांहि, और बहुविध कही॥
यह पूरव उत्पाद, मांहि व्याख्यान है।
सो श्रुत सम्यक् ज्ञान, जजों थुति आन है॥

ॐ ह्रीं श्रीउत्पादपूर्वश्रुतज्ञानाय अर्घ्यम्।

जामें दुर्नय तथा, सुनय व्याख्यान है।
अस्तिकाय अरु द्रव्य, तत्त्व शुभ ज्ञान है॥
अग्रायण पूरव में, यों व्याख्यान है।
सो श्रुत सम्यग्ज्ञान, जजों थुति आन है॥

ॐ ह्रीं श्रीअग्रायणीपूर्वश्रुतज्ञानाय अर्घ्यम्।

द्रव्य आत्म पर वीर्य, काल वीरज सही।
वीरज उभय अपार, तपो वीरज कही॥
वीरज गुण अनुवाद, मांहि यों ज्ञान है।
सो श्रुत सम्यग्ज्ञान, जजों थुति आन है॥

ॐ ह्रीं श्रीवीर्यानुवादपूर्वश्रुतज्ञानाय अर्घ्यम्।

अस्ति नास्ति वस्त्वादि, स्वभाव विषैं सही।
नित्यानित्य अनेक, एक आदिक कही॥

अस्ति नास्ति पूरव में, ऐसो ज्ञान है।
सो श्रुत सम्यग्ज्ञान, जजों थुति आन है॥

ॐ ह्रीं श्रीअस्तिनास्तिप्रवादपूर्वश्रुतज्ञानाय अर्घ्यम्।

आठ ज्ञान फल विषय, नाम वर्णन सही।
और अवान्तर भेद, ज्ञान के सब कही॥
ज्ञानप्रवाद सु पूरव, में व्याख्यान है।
सो श्रुत सम्यग्ज्ञान, जजों थुति आन है॥

ॐ ह्रीं ज्ञानप्रवादपूर्वश्रुतज्ञानाय अर्घ्यम्।

भेद वचन सत असत, उभय अनुभय सही।
वचन गुप्ति अरु भाषा, द्वादश जो कही॥
सत्प्रवाद सु पूरव, इह विध ज्ञान है।
सो श्रुत सम्यग्ज्ञान, जजों थुति आन है॥

ॐ ह्रीं सत्यप्रवादपूर्वश्रुतज्ञानाय अर्घ्यम्।

निश्चय आत्म अभेद, भेद व्यवहार है।
जीव पूज्य वा नहीं, पूज्य निर्धार है॥
इस विधि आत्मप्रवाद, पूर्व में ज्ञान है।
सो श्रुत सम्यग्ज्ञान, जजों थुति आन है॥

ॐ ह्रीं आत्मप्रवादपूर्वश्रुतज्ञानाय अर्घ्यम्।

कर्म भेद तिन नाम, बन्ध चव विध सही।
उदय सत्त्व को आदि, कर्म रचना सही॥
पूरव कर्म प्रवाद, मांहि व्याख्यान है।
सो श्रुत सम्यग्ज्ञान, जजों थुति आन है॥

ॐ ह्रीं श्रीकर्मप्रवादपूर्वश्रुतज्ञानाय अर्घ्यम्।

શ્રી દિગંબર જૈન સ્વાધ્યાયમંદિર ટ્રસ્ટ, સોનગઢ - ૩૬૪૨૫૦

जामें समिति गुप्ति, अनुप्रेक्षादिक कही।
पाप त्यागविधि और, महातप अघ नहीं॥
प्रत्याख्यान सु पूरव, इस विध ज्ञान है।
सो श्रुत सम्यग्ज्ञान, जजों थुति आन है॥

ॐ ह्रीं श्रीप्रत्याख्यानपूर्वश्रुतज्ञानाय अर्घ्यम्।

विद्या साधन मन्त्र, जन्त्र विधि जानिये।
स्वर लक्षण अरु स्वप्न, आदि विधि मानिये॥
पूरव यह विद्यानुवाद, शुभ थान है।
सो श्रुत सम्यग्ज्ञान, जजों थुति आन है॥

ॐ ह्रीं श्रीविद्यानुवादपूर्वश्रुतज्ञानाय अर्घ्यम्।

जिन कल्याणक उत्सव, त्रेसठ पद सही।
ज्योतिष गमन विचार, शकुन आदिक कही॥
यों पूरव कल्याण, वाद में ज्ञान है।
सो श्रुत सम्यग्ज्ञान, जजों थुति आन है॥

ॐ ह्रीं श्रीकल्याणवादपूर्वश्रुतज्ञानाय अर्घ्यम्।

आयुर्वेद सु मन्त्र, जन्त्र तन्तर घनै।
इस साधन की कला, और महिमा भनै॥
पूरव प्राणानुवाद, मांहि बहु ज्ञान है।
सो श्रुत सम्यग्ज्ञान, जजों थुति आन है॥

ॐ ह्रीं श्रीप्राणानुवादपूर्वश्रुतज्ञानाय अर्घ्यम्।

छन्द तथा व्याकर्ण, सङ्गीत कला सही।
चौंसठ तिय की कला, काव्य की विधि कही॥

Shri Digambar Jain Swadhyay Mandir Trust, Songadh - 364250

क्रियाविशाल सु पूरव, मति को थान है।
सो श्रुत सम्यग्ज्ञान, जजों थुति आन है॥

ॐ ह्रीं श्रीक्रियाविशालपूर्वश्रुतज्ञानाय अर्घ्यम्।

तीन लोकका कथन, मोक्ष व्याख्या सही।
गणित शास्त्रके सूत्र, और बहु विध कही॥
त्रिलोक बिन्दु यह पूर्व, महासुख थान है।
सो श्रुत सम्यग्ज्ञान, जजों थुति आन है॥

ॐ ह्रीं श्रीत्रिलोकबिन्दुपूर्वश्रुतज्ञानाय अर्घ्यम्।

(जोगीरासा छन्द)

समताभाव सकल जीवन पै, शम दम संयम भावे।
आरत रौद्र ध्यान निरवारै, धर्म शुक्ल उर लावे॥
ऐसो कथन कियो जिसमांहीं, सो सामायिक जानो।
या अँग को मैं लेय अर्घ कर, पूजों मन वच आनो॥

ॐ ह्रीं श्रीसामायिकप्रकीर्णकाङ्गश्रुतज्ञानाय अर्घ्यम्।

जामें चौबीसों जिन स्तवन, अतिशय की विधि गाई।
गर्भ जन्म तप ज्ञान मोक्ष की, और घनी विधि आई॥
अंग चतुर्विंशति स्तवन में, जिन चर्चा पहचानो।
या अँग को मैं लेय अर्घ कर, पूजों मन वच आनो॥

ॐ ह्रीं श्रीचतुर्विंशतिस्तवनप्रकीर्णकाङ्गश्रुतज्ञानाय अर्घ्यम्।

जिनप्रतिमा जिनमान लीजिये, भक्ति घनी मन लाई।
तीर्थंकर इक को सिर नावत, हाथ जोड़ि कर भाई॥

श्री दिगंबर जैन स्वाध्यायमंदिर ट्रस्ट, सोनगढ - ३६४२५०

वन्दनांग ये नाम जास को, तामें या विधि जानो।
या अँग को मैं लेय अर्घ कर, पूजों मन वच आनो॥

ॐ ह्रीं श्रीवन्दनाप्रकीर्णकाङ्गश्रुतज्ञानाय अर्घ्यम्।

जो परमाद थकी अघ उपजे, ताके मेटन भाई।
पश्चात्ताप विधी ईर्यापथ, पाक्षिक वार्षिक गाई॥
कहा अंग प्रतिक्रमण प्रभू ने, दोषहरण को थानो।
या अँग को मैं लेय अर्घ कर, पूजों मन वच आनो॥

ॐ ह्रीं श्रीप्रतिक्रमणप्रकीर्णकाङ्गश्रुतज्ञानाय अर्घ्यम्।

दर्शन ज्ञान चरित्र सुतप की, विनय कीजिये भाई।
गुरुजन गुणिजन की भी कीजे, विनय भाव शुभ लाई॥
इत्यादिक इस विनय अंग में, विनयाचार बखानो।
या अँग को मैं लेय अर्घ कर, पूजों मन वच आनो॥

ॐ ह्रीं श्रीविनयप्रकीर्णकाङ्गश्रुतज्ञानाय अर्घ्यम्।

नरदेवोंके वन्दन की विधि, नति आवर्त सु भाई।
परदक्षिण शुद्धी आदिक भी, श्रुति जैसी बतलाई॥
क्रम क्रम सकल कही है यामें, शुभदायक सुखदाई।
या अँग को मैं लेय अर्घ कर, पूजों मन वच काई॥

ॐ ह्रीं श्रीकृतिकर्मप्रकीर्णकाङ्गश्रुतज्ञानाय अर्घ्यम्।

मुनि यों भोजन पानी लेवें, यों चालें यों सोवें।
ऐसे वचन कहें मुख सेती, ऐसे अघ मल धोवें॥
मुनि आचार भनो इस मांही, दश वैकालिक मानो।
या अँग को मैं लेय अर्घ कर, पूजों मन वच आनो॥

ॐ ह्रीं श्रीदशवैकालिकप्रकीर्णकाङ्गश्रुतज्ञानाय अर्घ्यम्।

Shri Digambar Jain Swadhyay Mandir Trust, Songadh - 364250

श्री दिगंबर जैन स्वाध्यायमंदिर ट्रस्ट, सोनगढ - ३६४२५०

मुनि सहें बावीस परीषह, तिन फल सकल जताये।
देव अचेतन नर तिर्यक्कृत, जो उपसर्ग बताये॥
उत्तराध्ययन प्रकीर्णक मांही, सकल शुभाशुभ जानो।
या अँग को मैं लेय अर्घ कर, पूजों मन वच आनो॥

ॐ ह्रीं श्रीउत्तराध्ययनप्रकीर्णकाङ्गश्रुतज्ञानाय अर्घ्यम्।

यह आचार मुनीश्वर जोगा, यह जोगा है नाहीं।
हो अयोग्य आचरण कभी तो, दण्डयोग्य मुनि मांहीं॥
इत्यादिक अँग कल्पविहारै, कही सकल चित मानो।
या अँग को मैं लेय अर्घ कर, पूजों मन वच आनो॥

ॐ ह्रीं श्रीकल्पव्यवहारप्रकीर्णकाङ्गश्रुतज्ञानाय अर्घ्यम्।

मुनि की किरिया द्रव्य क्षेत्र पुन, काल भाव यों जोगा।
सो ही विधि योगीश्वर ठाने, उपजें आत्म प्रयोगा॥
कल्पाकल्प प्रकीर्ण अंग में, ऐसी वार्ता जानो।
या अँग को मैं लेय अर्घ कर, पूजों मन वच आनो॥

ॐ ह्रीं श्रीकल्पाकल्पप्रकीर्णकाङ्गश्रुतज्ञानाय अर्घ्यम्।

जिनकल्पी अरु स्थविरकल्पी, शिक्षा दीक्षा दानी।
पोषण आतम शुद्धि समाधी, किरिया सकल बखानी॥
उत्तमचर्या वा आराधन, और घनी विधि जानो।
या अँग को मैं लेय अर्घ कर, पूजों मन वच आनो॥

ॐ ह्रीं श्रीमहाकल्पप्रकीर्णकाङ्गश्रुतज्ञानाय अर्घ्यम्।

चतुर्निकाय देवकुल में ज्यों, पावे सुरतन भाई।
पूजा दान तपस्या समकित, निर्जर हेतु बताई॥

श्री दिगंबर जैन स्वाध्यायमंदिर ट्रस्ट, सोनगढ - ३६४२५०

पुंडरीक अँग मांहि कह्यो यह, कथन जीव सुखदानो।
या अँग को मैं लेय अर्घ कर, पूजों मन वच आनो॥

ॐ ह्रीं श्रीपुण्डरीकप्रकीर्णकाङ्गश्रुतज्ञानाय अर्घ्यम्।

किस तप ध्यान थकी मुनि उपजें, अहमिन्दर पद पाई।
किस तपतें वा कौन ध्यानतैं, इन्द्रादिक हों भाई॥
इत्यादिक विधि जामें गाई, पुण्डरीक सो जानो।
या अँग को मैं लेय अर्घ कर, पूजों मन वच आनो॥

ॐ ह्रीं श्रीमहापुण्डरीकप्रकीर्णकाङ्गश्रुतज्ञानाय अर्घ्यम्।

जो जो अघ परमाद बढ़ावे, ता शासन विधि गाई।
जो जो पाप मिटे जा विधितैं, सो सो सकल बताई॥
नाम निषिधिका कहा तास को, ज्ञानागार बखानो।
या अँग को मैं लेय अर्घ कर, पूजों मन वच आनो॥

ॐ ह्रीं श्रीनिषिधिकाप्रकीर्णकाङ्गश्रुतज्ञानाय अर्घ्यम्।

(गीतिका छन्द)

हैं आठ भेद निमित्त के सो, ज्ञान अद्भुत है सही।
तिस ज्ञान की महिमा लखत ही, भाव मिथ्या ना रही॥
यह भलो ज्ञान अनूप फलदा, होय सम्यक् सहित जी।
सो जजों मन वच काय यह श्रुत, अरघ तैं थुति कहत जी॥

ॐ ह्रीं श्री अष्टांगनिमित्तश्रुतज्ञानाय अर्घ्यम्।

आकाश में रवि चन्द्र तारा, मेघ पटलादिक सही।
सन्ध्या समय के चिन्ह और, अनेक वातन को कही॥

Shri Digambar Jain Swadhyay Mandir Trust, Songadh - 364250

जो होय इनके निमित सेती, शुभाशुभ सो जानियो।
अन्तरीक्ष हेतुक ज्ञान पूजों, श्रेष्ठ सम्यक् मानिये॥

ॐ ह्रीं श्री अन्तरीक्षनिमित्तश्रुतज्ञानाय अर्घ्यम्।

भूमि में रत्नादि कंचन, धातु खानि सुजान है।
इन आदि और अनेक रचना, भूमि की पहिचान है॥
सो लखै ऐसो निमित ज्ञानी, शुभाशुभ जाने सही॥
भौम को यह निमित लखिकरि, जजों सम्यक् श्रुत सही।

ॐ ह्रीं श्रीसम्यग्भौमनिमित्तश्रुतज्ञानाय अर्घ्यम्।

मनुज तिर्यक देह के शुभ, अशुभ चिन्ह सु जानिये॥
नख सुकेशादिक सुलखि कर, इष्ट अनिष्ट बखानिये॥
यह अंग निमित्तज्ञान अद्भुत, महासुखदा जीय जी।
मैं जजों अंग निमित्त सम्यक, ज्ञान श्रुत सो होय जी॥

ॐ ह्रीं श्रीसम्यगङ्गनिमित्तश्रुतज्ञानाय अर्घ्यम्।

सुन शब्द नर तिर्यञ्च के जो, शुभाशुभ जाने सही।
खर शब्द घूघू काक स्याल, सु सेहिका की ध्वनि कही॥
इन आदि वचसुन कहै सुखदुख, निमित स्वर सो जानिये।
मैं जजों यह श्रुतज्ञान सम्यक्, अर्ध्य मन वच ठानिये॥

ॐ ह्रीं श्रीसम्यक्स्वरनिमित्तश्रुतज्ञानाय अर्घ्यम्।

तिल मसा भोंरी गांठ रेखा, पांव कर में जोय है।
तिस निमित्त ज्ञानसु सकल जानें, शुभाशुभ जो होय है॥
यह ज्ञान व्यंजन निमित नीको, शुभाशुभ निर्धार जी।
मैं जजों यह श्रुतज्ञान सम्यक्, अर्ध्य मन वच कायजी॥

ॐ ह्रीं श्रीसम्यग्व्यंजननिमित्तश्रुतज्ञानाय अर्घ्यम्।

શ્રી દિગંબર જૈન સ્વાધ્યાયમંદિર ટ્રસ્ટ, સોનગઢ - ૩૬૪૨૫૦

तन वृषभ स्वस्तिक कलश व्रज, सुमच्छ इन आदिक सही।
सब जोय लक्षण देखि इनको, शुभाशुभ भाषे यही॥
यह ज्ञान लक्षण निमित्त आछो, भले फल को दाय है।
मैं जजों यह श्रुतज्ञान सम्यक्, अरघ ले सुख पाय है॥

ॐ ह्रीं श्रीसम्यग्लक्षणनिमित्तश्रुतज्ञानाय अर्घ्यम्।

तहँ पट सु भूषण शीश के अर, वर पगों के जान जी।
तिनको जु काटें मूषिकादिक, भेद तिनको आन जी॥
यह भेद शुभ अर अशुभ भाखै, देखिके सुख दुख कहे।
यह छिन्न निमित्त सु ज्ञान नीको, पूज्य मन वच तन चहे॥

ॐ ह्रीं श्रीसम्यक्छिन्ननिमित्तश्रुतज्ञानाय अर्घ्यम्।

जो लखे सुपना शुभाशुभ को, भेद सुख दुख जान जी।
इन आदि अंग अनेक समझे, सकल भेद सु आनजी॥
यह ज्ञान निमित निमित्त जीको, बढ़े अतिशय धार जी।
सो जजों सम्यक् सहित मन वच, श्रुतज्ञान सु सार जी॥

ॐ ह्रीं श्रीसम्यक्स्वप्ननिमित्तश्रुतज्ञानाय अर्घ्यम्।

(जोगीरासा छन्द)

ये ही आठों निमित ज्ञान हैं, जग में अचरजकारी।
तिनकों देखि भरम सब जावे, और घने गुण धारी॥
सम्यक् जुत यह महाज्ञान नद, याको मुनि अवगाहें।
ऐसो लखि कें मैं भी मन वच, अरघ जजों हरषाहैं॥

ॐ ह्रीं श्रीसम्यङ्निमित्तश्रुतज्ञानाय अर्घ्यम्।

Shri Digambar Jain Swadhyay Mandir Trust, Songadh - 364250

श्री दिगंबर जैन स्वाध्यायमंदिर ट्रस्ट, सोनगढ - ३६४२५०

लोक असंखे क्षेत्र सुजाने, काल असंखो भाई।
द्रव्य लखे परमाणू सूक्षम, भाव आदि अधिकाई॥
ऐसो सर्वावधी ज्ञान लखि, मुनि बिन और न पावे।
तातें मैं या ज्ञान जजत हो, यातें मो ढिग आवे॥

ॐ ह्रीं श्रीसर्वावधिसम्यग्ज्ञानाय अर्घ्यम्।

लोक असंख्यो जाने क्षेत्रो, वरष असंख्यो कालो।
कार्माण तन सुक्षम जोवे, द्रव्य अपेक्षा वालो॥
परमावधि सु ज्ञान बड़ा है, सर्वावधि लघु पावे।
तातें मैं यह ज्ञान जजत हों, यातें मो ढिग आवे॥

ॐ ह्रीं श्रीपरमावधिसम्यग्ज्ञानाय अर्घ्यम्।

तीनों लोक क्षेत्र की जानें, काल पल्य परिमाने।
द्रव्य अपेक्षा कार्माण तन, भाव यथावत जाने॥
अति उत्तम यह ज्ञान विषय है, देशावधी जनावे।
तातें मैं यह ज्ञान जजत हों, यातें मो ढिग आवे॥

ॐ ह्रीं श्रीदेशावधिसम्यग्ज्ञानाय अर्घ्यम्।

हीयमान जो अवधि कह्यो है, ताको यह सोभावा।
उपजे तबही तें घटवो कर, अंश सकल निरदावा॥
याका अंश बढ़े नहिं कबहूँ, जिनवानी यों गावे।
तातें मैं यह ज्ञान जजत हों, यातें मो ढिग आवे॥

ॐ ह्रीं श्रीहीयमानसम्यगवधिज्ञानाय अर्घ्यम्।

उपजे जबतैं अवधिज्ञान उर, आप महा सुखदाई।
तबही तें यह बढ़े आयु लों, नाहीं कबहुँ घटाई॥

श्री दिगंबर जैन स्वाध्यायमंदिर ट्रस्ट, सोनगढ - ३६४२५०

वर्धमान यह अवधिज्ञान है, समकित जुत मुनि पावें।
तातें मैं यह ज्ञान जजत हों, यातें मो ढिग आवे॥

ॐ ह्रीं श्रीवर्धमानसम्यगवधिज्ञानाय अर्घ्यम्।

जब जिस क्षेत्रर में उपजे उर, ज्ञान अवधि सुखदाई।
तिसही थानकमें थिति जाकी, और क्षेत्र नहिं जाई॥
अवधिज्ञान यह अननुगामिनी, परभव संग न जावे।
तातें मैं यह ज्ञान जजत हों, यातें मो ढिग आवे॥

ॐ ह्रीं श्रीअननुगामिसम्यगवधिज्ञानाय अर्घ्यम्।

उपजे जा भव में उर आवे, अवधिज्ञान सुखकारी।
आयु अन्त तक रहे साथ में, पीछे परभव लारी॥
अनुगामी है नाम इसी का, अवधि ज्ञान कहलावे।
तातें मैं यह ज्ञान जजत हों, यातें मो ढिग आवे॥

ॐ ह्रीं श्रीअनुगामिसम्यगवधिज्ञानाय अर्घ्यम्।

जितने अंशों में पैदा हो, उतना ही प्रिय भाई।
आयु अन्त लों तहां रहें थिर, घट बढ़ हो न कदाई॥
ज्ञान अवधि यह जान अवस्थित, सम्यक् रूप लहावे।
तातें मैं यह ज्ञान जजत हों, यातें मो ढिग आवे॥

ॐ ह्रीं श्रीअवस्थितसम्यगवधिज्ञानाय अर्घ्यम्।

अवधिज्ञान उपजै जबतें उर, कबहूँ घट बढ़ जाई।
अंश बढ़ै कबहूँ बहु जानों, कबहूँ अंश घटाई॥
यह अनवस्थित ज्ञान अवधि है, सम्यक् जुत फल पावे।
तातें मैं यह ज्ञान जजत हों, यातें मो ढिग आवे॥

ॐ ह्रीं श्रीअनवस्थितसम्यगवधिज्ञानाय अर्घ्यम्।

Shri Digambar Jain Swadhyay Mandir Trust, Songadh - 364250

विपुलमति मनपर्यय ज्ञानी, पर के मन की पावे।
सरल गूढ़ जो मनके विकलप, सारे भेद लखावे॥
क्षेत्र अढाई द्वीप काल भी, पल्य असंखो जानो।
ऐसो विकलप जाने पर मन, ज्ञान पूज्य सो मानो॥

ॐ ह्रीं श्री विपुलमतिमन:पर्ययसम्यग्ज्ञानाय अर्घ्यम्।

सरलभाव मन विकलप जाने, कुटिलभाव नहिं जाने।
उत्तम सात आठ योजन भव, क्षेत्र काल की जाने।
ऋजुमति मनपर्यय यों जाने, मनचिन्तित प्रिय भाई।
पर मनके विकलप जो जाने, ताहि जजों सुखदाई॥

ॐ ह्रीं श्री ऋजुमतिमन:पर्ययसम्यग्ज्ञानाय अर्घ्यम्।

तीनलोक नि:सीम अलोक-कि, काल तीन की जाने।
जीव अजीव तत्त्व बरतेंगे, वर्ते वरतत जाने॥
गुण पर्याय लसें सो सो तब, जो जो स्वांग बनाये।
इत्यादिक सब जाने केवल, ज्ञान जजों थुति लाये॥

ॐ ह्रीं श्रीकेवलज्ञानाय अर्घ्यम्।

ऐसे मति श्रुत अवधि ज्ञान लखि, मनपर्यय सुखदाई।
केवलज्ञान अनादि अपारी, जानत खेद न पाई॥
या विध पांचों ज्ञान सुसम्यक्, पूज्य कहे जिनवानी।
तातें अरध बनाय जजो ये, मोहि मिलें सुखदानी॥

ॐ ह्रीं श्रीसम्यग्ज्ञानाय पूर्णार्घ्यम्।

श्री दिगंबर जैन स्वाध्यायमंदिर ट्रस्ट, सोनगढ - ३६४२५०

जयमाला

(दोहा)

दीखे ज्ञान थकी सकल, ज्ञानभानु सो जान।
मैं पूजों मन वचन तन, मो उर प्रकटो आन॥

(चाल मुनियानन्दि)

ज्ञान की आन सब लोक परमान जी,
ज्ञान ही कर्म को मूल तें ढाय जी।
ज्ञान पुण्य पाप की राह बतलाय है,
ज्ञान यों जजों उर वसो मम आय है॥

ज्ञान ही देय शिव स्वर्ग थानक मही,
ज्ञान तैं चक्रधर अर्द्धचक्री कही।
ज्ञान ही लोक में सर्व सुखदाय है,
ज्ञान यों जजों उर वसो मम आय है॥

ज्ञान तैं कर्म अरि जीतना जान है,
ज्ञान तैं आपने पाप जिय हान है।
ज्ञान ही लोक का गुरु हितदाय है,
ज्ञान यों जजों उर वसो मम आय है॥

ज्ञान तें वृत्त तप ध्यान शुभ होय जी,
ज्ञान ही सकल उर भरम को खोय जी।
ज्ञान अघ मैल को धोय सुध लाय है,
ज्ञान यों जजों उर वसो मम आय है॥

Shri Digambar Jain Swadhyay Mandir Trust, Songadh - 364250

ज्ञान चक्षू भले गूढ अर्थ जानिये,
ता थकी भेद शुभ वा अशुभ जानिये।
ज्ञाननद वारि तें पापमल जाय है,
ज्ञान यों जजों उर वसो मम आय है॥

ज्ञान ही लोक का श्रेष्ठ रत्न जानिये,
ज्ञान ही धर्म सब जीव हित जानिये।
ज्ञान जग कर्मवन नाश करवाय है,
ज्ञान यों जजों उर वसो मम आय है॥

ज्ञान तैं लोक दुःख जाय भय आन की,
ज्ञान तैं मोक्षतिय वरत है जान जी।
ज्ञान रवि होय मिथ्यात्वतम जाय है,
ज्ञान यों जजों उर वसो मम आय है॥

ज्ञान सम कर्मक्षयकर नहीं जानिये,
मोहमद हरन को भलो भट मानिये।
ज्ञान सों सकल उर दुःख मिट जाय है,
ज्ञान यों जजों उर वसो मम आय है॥

ज्ञान जग भेद सब जान भ्रम भान जी,
ज्ञान तैं मिटे उर क्रोध छल मान जी।
ज्ञान उर होय तब धर्म मन भाय है,
ज्ञान यों जजों उर वसो मम आय है॥

ज्ञान मति भेद शत तीन छत्तीस जी,
ज्ञान श्रुत अंग पूर्व भेद सर्व ईश जी।

શ્રી દિગંબર જૈન સ્વાધ્યાયમંદિર ટ્રસ્ટ, સોનગઢ - ૩૬૪૨૫૦

अवधि के भेद त्रय तथा बहु थाय हैं,
ज्ञान यों जजों उर वसो मम आय है॥

ज्ञान मनपर्यय के भेद दो जानिये,
ज्ञान शुद्ध केवला एकविध मानिये।
इन विषैं गुन घना भलो फलदाय है,
ज्ञान यों जजों उर वसो मम आय है॥

(दोहा)

देव धर्म गुरु ज्ञान तैं, पावे जिय शिवधाम।
तातैं मैं शुध ज्ञान कों, मन वच करों प्रणाम॥

ॐ ह्रीं श्रीसम्यग्ज्ञानाय जयमालार्घ्यम्।

इति सम्यग्ज्ञानपूजा समाप्ता ।

Shri Digambar Jain Swadhyay Mandir Trust, Songadh - 364250

सम्यक्चारित्र पूजा

(अडिल्ल छन्द)

पंच महाव्रत सार समिति पांचों सही,
गुप्ति तीन मिल तेरह विध जिन ध्वनि कही।
यो ही शुभ चारित्र भवोदधि नाव है,
सो मैं पूजो थाप यहां कर चाव है॥

ॐ ह्रीं श्री सम्यक्चारित्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट्।

ॐ ह्रीं श्री सम्यक्चारित्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।

ॐ ह्रीं श्री सम्यक्चारित्र ! अत्र मम सन्निहितं भव भव वषट्।
परिपुष्पांजलिं क्षिपामः।

(जोगीरासा की चाल)

क्षीरसमान मनोज्ञ सुनिर्मल, त्रस जीवन बिन जानो।
उज्जल क्षीरोदधि को जलले, देखत उर हरषानो॥
कनक झारिमें धरकर लायो, भक्ति धार सुखदाई।
पूजों सम्यक्चारित मन वच, काय अंग सब नाई॥

ॐ ह्रीं श्रीसम्यक्चारित्राय जलम्।

बावन चंदन अगर मिलायो, नीर सुसंग घिसायो।
ताकी गंध मत्त हो अलिगण, चउ दिशि तें उड आयो॥
ऐसो चन्दन गंधसहित जो, कनकपात्र धरि लाई।
पूजों सम्यक्चारित मन वच, काय अंग सब नाई॥

ॐ ह्रीं श्रीसम्यक्चारित्राय चन्दनम्।

अक्षत उज्ज्वल मुक्ताफल से, खण्डरहित चुनवाये।
श्रेष्ठ सुगन्धित विविध जातिके, जो मन अति हरषाये॥
ऐसे अक्षत कनकथाल धरि, प्रचुर भक्ति उर लाई।
पूजों सम्यक्चारित मन वच, काय अंग सब नाई॥

ॐ ह्रीं श्रीसम्यक्चारित्राय अक्षतम्।

फूल मनोहर अति सुखदाई, नाना रँग के प्यारे।
गंध महा जिन मांहि घनी है, धार सुभग आकारे॥
तिन फूलन की माला करि मैं, भक्ति घनी मन लाई।
पूजों सम्यक्चारित मन वच, काय अंग सब नाई॥

ॐ ह्रीं श्रीसम्यक्चारित्राय पुष्पम्।

नानारस मिलवाय बनाये, चरु अति ही सुखदाई।
मोदक आदि मनोहर जानो, ज्यों नैवेद्य सुगाई॥
सो हम नीके पातर में धरि, विनयसहित पुनदाई।
पूजों सम्यक्चारित मन वच, काय अंग सब नाई॥

ॐ ह्रीं श्रीसम्यक्चारित्राय नैवेद्यम्।

दीपक रतन तने करि लीने, घनी ज्योति बहु धारी।
कनकथाल भरि निजकर लायो, करन आरती भारी॥
मन वच तन शुभ भावन से मैं, भक्ति हिये बहु लाई।
पूजों सम्यक्चारित मन वच, काय अंग सब नाई॥

ॐ ह्रीं श्रीसम्यक्चारित्राय दीपम्।

धूप भली दाहै तन वह्नी, तातें भगति पियारी।
नाना गँध तिस मांहि मेलिकें, कीनी अति सुखकारी॥

શ્રી દિગંબર જૈન સ્વાધ્યાયમંદિર ટ્રસ્ટ, સોનગઢ - ૩૬૪૨૫૦

ऐसी दशधा धूप हाथ ले, अग्नि मांहि जलाई।
पूजों सम्यक्चारित मन वच, काय अंग सब नाई॥

ॐ ह्रीं श्रीसम्यक्चारित्राय धूपम्।

श्रीफल लोंग बदाम सुपारी, खारक पिस्ता जानी।
और अनेक भले फल करले, आयो अति हरषानो॥\
नीके पात्र धार के मन तन, भाव भक्ति सब लाई।
पूजों सम्यक्चारित मन वच, काय अंग सब नाई॥

ॐ ह्रीं श्रीसम्यक्चारित्राय फलम्।

जल चन्दन अक्षत सु पहुप चरु, दीप धूप फल प्यारे।
मिला सर्व को अर्ध बनाये, सुन्दर पात्र पसारे॥
अपने कर ले करों आरति, नानाविध गुण गाई।
पूजों सम्यक्चारित मन वच, काय अंग सब नाई॥

ॐ ह्रीं श्रीसम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।

प्रत्येकार्घ

(चाल--जोगीरासा)

जिन आज्ञा जुत मुनि वच बोलें, सुन सब जिय सुख पावें।
हिंसावचन नहीं ऋषि भाखें, करुणा अति मन ल्यावें॥
शुद्ध अहिंसा व्रत तब होवे, वच अपने वश राखें।
या जुत सम्यक्चारित पूजों, करके व्रत अभिलाखें॥

ॐ ह्रीं वचनाहिंसामहाव्रतसहितसम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।

Shri Digambar Jain Swadhyay Mandir Trust, Songadh - 364250

શ્રી દિગંબર જૈન સ્વાધ્યાયમંદિર ટ્રસ્ટ, સોનગઢ - ૩૬૪૨૫૦

मन तें हिंसा भाव निवारें, करुणाजुत मन धारी।
महावरत तब होय अहिंसा, मन राखें हितकारी॥
मुनि किरपानिधि सब जगबंधू, मन तें दोष न भाखें।
या जुत सम्यक्चारित पूजों, करके व्रत अभिलाखें॥

ॐ ह्रीं मनोहिंसारहिताहिंसामहाव्रतसहितसम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।

षटकायिक जीवन पीडाहर, मारग देख सु चालें।
सूक्षम बादर सब पर करुणा, चार हाथ लखि हालें॥
शुद्ध अहिंसा व्रत तब होवे, यह जिनवाणी भाखे।
या जुत सम्यक्चारित सोई, पूजों व्रत अभिलाखें॥

ॐ ह्रीं ईर्यासमितिसहिताहिंसामहाव्रतयुतसम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।

पिछी कमंडलु पुस्तक निज कर, जोवें धरें उठावें।
दयाभाव सब जीवन ऊपर, तातें यह विधि लावें॥
महावरत तब शुद्ध अहिंसा, त्रस थावर की राखें।
या जुत सम्यक्चारित पूजों, करके व्रत अभिलाखें॥

ॐ ह्रीं आदाननिक्षेपणयुताहिंसामहाव्रतयुतसम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।

जीवदया के हेतु महामुनि, दोष हटा कर खावें।
समतासागर सब जियबन्धु, खान पान सुध पावें॥
तबहिं अहिंसा व्रत की शुद्धि, होय इसी विधि राखें।
या जुत सम्यक्चारित पूजों, करके व्रत अभिलाखें॥

ॐ ह्रीं एषणासहिताहिंसामहाव्रतसहितसम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।

प्रथम महाव्रत जान अहिंसा, सो या विधि समझायो।
पांच भावना ताकी ऐसी, इनसे शुद्ध बतायो॥

Shri Digambar Jain Swadhyay Mandir Trust, Songadh - 364250

यही अहिंसा महासुव्रत है, सब जीवन प्रति राखे।
या जुत सम्यक्चारित सोई, पूजों व्रत अभिलाखे॥

ॐ ह्रीं पंचभावनायुताहिंसामहाव्रतसहितसम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।

क्रोध सहित वच असत कहा है, करे प्रतीति न कोई।
तातें क्रोध बिना सच भाषे, वचन महाशुभ होई॥
ऐसो सत्य महाव्रत धारी, जग गुरुराज सुभाखे।
या जुत सम्यक्चारित सोई, पूजों व्रत अभिलाखे।

ॐ ह्रीं क्रोधरहितसत्यमहाव्रतसहितसम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।

लोभ तनै वश सांच न बोले, ना परतीति सुभाई।
लोभ बिना परमारथ भाषे, सत्य वचन सुखदाई॥
या विधि सत्य महाव्रत उत्तम, भवदधि परता राखे।
या जुत सम्यक्चारित सोई, पूजों व्रत अभिलाखे॥

ॐ ह्रीं निर्लोभभावनायुतसत्यमहाव्रतयुतसम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।

भयजुत प्राणी सांच न बोले, कहे झूठ उकताई।
भय से भीत अन्यथा भाषे, यह निश्चय लखि भाई॥
भीति बिना जो होय महाव्रत, सो जिय का सत राखे।
या जुत सम्यक्चारित सोई, पूजों व्रत अभिलाखे॥

ॐ ह्रीं भयरहितसत्यमहाव्रतसहितसम्यक्चारित्राय अर्घ्यम।

हास्य विषें वच सांच न जानै, हास्य सत्य को घातै।
हास्य तहां सतवैन न उपजै, हास्य बिना सत पावै॥
तातें हास्य बिना जु महाव्रत, शुद्ध होय जिन भाखे।
या जुत सम्यक्चारित सोई, पूजों व्रत अभिलाखे॥

ॐ ह्रीं हास्यरहितसत्यमहाव्रतसहितसम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।

श्री दिगंबर जैन स्वाध्यायमंदिर ट्रस्ट, सोनगढ - ३६४२५०

वच शास्त्रानुकूल ही कहना, वच अनुवीचि प्रमानो।
शास्त्रविरुद्ध कहे नहिं कबहूँ, सत्य विरतधर मानो॥
जो अनुवीचि वच प्रिय होवे, सत्य महाव्रति भाखे।
या जुत सम्यक्चारित सोई, पूजों व्रत अभिलाखे॥

ॐ ह्रीं अनुवीचिभाषणयुतसत्यमहाव्रतयुतसम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।

पांच भावना सत्यविरत की, पाल कहे सच वयना।
सत्यमहाव्रत सहित भावना, पाप हरै सुख झरना॥
ऐसे सत्य महाव्रत की सो, पल-पल महिमा राखे।
या जुत सम्यक्चारित सोई, पूजों व्रत अभिलाखे॥

ॐ ह्रीं पंचभावनायुतसत्यमहाव्रतसहितसम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।

सूने घर में नाहीं जावे, जानें चोरी त्यागी।
भूमि परी विसरी पर वस्तू, लेय नहीं विनरागी॥
सो अचौर्य महाव्रत धर यति, भाव प्रतिज्ञा राखे।
या जुत सम्यक्चारित सोई, पूजों व्रत अभिलाखे॥

ॐ ह्रीं शून्यगृहप्रवेशरहिताचौर्यमहाव्रतयुतसम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।

ऊजडगृह में वास करे तो, चोरी दूषण पावे।
तातैं छोडे घर के मांहीं, मुनि नहीं ध्यान लगावें॥
व्रत आचौर्य यह जान महाव्रत, निज मन वश में राखे।
या जुत सम्यक्चारित सोई, पूजों व्रत अभिलाखे॥

ॐ ह्रीं निर्जनगृहवासरहिताचौर्यमहाव्रतयुतसम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।

Shri Digambar Jain Swadhyay Mandir Trust, Songadh - 364250

श्री दिगंबर जैन स्वाध्यायमंदिर ट्रस्ट, सोनगढ - ३६४२५०

निजथल पर का आना रोके, सो चोरी अघ पावे।
व्रत अचौर्य में यातें यतिजन, औगुण मोटो लावे॥
शुद्ध अचौर्य महाव्रत जानो, जो यह दोष न राखे।
या जुत सम्यक्चारित सोई, पूजों व्रत अभिलाखे॥

ॐ ह्रीं परोपरोधाकरणयुताचौर्यमहाव्रतयुतसम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।

दाता दे सो भोजन लें मुनि, आप न सेन बतावें।
देय इशारा भोजन लें तो, चोरी दूषण पावें॥
दोष बिना लीये शुध भोजन, सो अचौर्य व्रत भाखे।
या जुत सम्यक्चारित सोई, पूजों व्रत अभिलाखे॥

ॐ ह्रीं भैक्ष्यशुद्धियुताचौर्यमहाव्रतसहितसम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।

आपस माहीं धर्मी जनसों, विसम्वाद ना करहीं।
समता धार त्याग यह दूषण, व्रत अचौर्य मन धरहीं॥
धर्मी से गौवत्स प्रेम सम, प्रेम किये सुख चाखे।
या जुत सम्यक्चारित सोई, पूजों व्रत अभिलाखे॥

ॐ ह्रीं सधर्माविसंवाददोषरहिताचौर्यव्रतयुतसम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।

पंच भावना ऐसी इन जुत, वृत्त अमल सु कहावे।
इन्हें भुलाये चोरि दोष हो, नाहिं निमित्त मिलावे॥
दोष गये शुद्ध होय अचोरी, महाविरत ध्वनि भाखे।
या जुत सम्यक्चारित सोई, पूजों व्रत अभिलाखे॥

ॐ ह्रीं पंचभावनायुताचौर्यमहाव्रतसहितसम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।

Shri Digambar Jain Swadhyay Mandir Trust, Songadh - 364250

श्री दिगंबर जैन स्वाध्यायमंदिर ट्रस्ट, सोनगढ - ३६४२५०

नारिकथा सुनके जो मनमें, तिय अनुराग बढ़ावे।
ताको शील लहै दूषण को, या विन शील रहावे॥
रामारागकथा से बर्जित, ब्रह्मचर्य शुभ भाखे।
या जुत सम्यक्चारित सोई, पूजों व्रत अभिलाखे॥

ॐ ह्रीं स्त्रीरागकथाश्रवणदोषरहितब्रह्मचर्यमहाव्रतसहितसम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।

अति सुन्दर नारीतन देखे, वार वार धरि रागा।
ताके शील सुरत्न विरत को, मोटो अवगुन लागा॥
ऐसे दोष बिना सुशील व्रत, भवदधि परता राखे।
या जुत सम्यक्चारित सोई, पूजों व्रत अभिलाखे॥

ॐ ह्रीं स्त्रीमनोहरांगनिरीक्षणदोषरहितब्रह्मचर्यमहाव्रतसहितसम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।

मुनिपद पहले राजसमय में, भोग किये थे भारी।
तिनकी याद किये से दूषण, शील लहे दुखकारी॥
पूर्वरतानुस्मरण रहित यों, शील महाव्रत राखे।
या जुत सम्यक्चारित सोई, पूजों व्रत अभिलाखे॥

ॐ ह्रीं पूर्वरतानुस्मरणरहितब्रह्मचर्यमहाव्रतसहित-सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।

भोजन नांहि गरिष्ट करें मुनि, शील सुरक्षा काजे।
दधि घृत मेवादिक के खाये, ब्रह्मचर्य व्रत लाजे॥
तातें ऐसा भोजन तजि के, शील महाव्रत राखे।
या जुत सम्यक्चारित सोई, पूजों व्रत अभिलाखे॥

ॐ ह्रीं वृष्येष्टरसत्यागसहितब्रह्मचर्यमहाव्रतसहितसम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।

Shri Digambar Jain Swadhyay Mandir Trust, Songadh - 364250

अपने तन के मंजन, चूरन, न्हवन धोवना लावे।
ऐसी किरिया जो मुनि राखै, शील दोष को पावे॥
तातैं तन श्रृंगाररहित जो, शील महाव्रत राखे।
या जुत सम्यक्चारित सोई, पूजों व्रत अभिलाखे॥

ॐ ह्रीं स्वशरीरसंस्कारहितब्रह्मचर्यमहाव्रतसहितसम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।

पंच भावना ऐसी पालें, शील करत सुध भावे।
ताको मुक्ति मनोहर रमणी, वेगहिं पास बुलावे॥
ऐसो शील महाव्रत नीको, जो मुनि दृढ़ करि राखे।
या जुत सम्यक्चारित सोई, पूजों व्रत अभिलाखे॥

ॐ ह्रीं पंचभावनायुतब्रह्मचर्यमहाव्रतसहितसम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।

कोमल कठिन चीकनो रूखो, लघु शीतोष्ण महानो।
ऐसे आठ विषय सों विरकत, परिग्रहत्याग सुजानो॥
आतम के अनहितके कारण, तामें मन नहिं राखे।
या जुत सम्यक्चारित सोई, पूजों व्रत अभिलाखे॥

ॐ ह्रीं स्पर्शनेन्द्रियशुभाशुभविषयरहितपरिग्रहत्यागमहाव्रत-सहित सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।

खट्टा मीठा कडुवा जानों, अरु कषायलो भाई।
और चिरपिरा पांच विषय में, रसना बहु ललचाई॥
ये रसना के भोग शुभाशुभ, भोग परिग्रह राखे।
या जुत सम्यक्चारित सोई, पूजों व्रत अभिलाखे॥

ॐ ह्रीं रसनेन्द्रियशुभाशुभविषयरहितपरिग्रहत्यागमहाव्रतसहित-सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।

श्री दिगंबर जैन स्वाध्यायमंदिर ट्रस्ट, सोनगढ - ३६४२५०

नासा इन्द्रिय विषय शुभाशुभ, भोग परिग्रह सोई।
गंध विषय ललचांय जीव ते, परिग्रही अतिमोही॥
तातैं इनके त्यागी भये जे, परिग्रहत्यागि सुभाखे।
या जुत सम्यक्चारित सोई, पूजों व्रत अभिलाखे॥

ॐ ह्रीं घ्राणेन्द्रियशुभाशुभविषयरहितपरिग्रहत्यागमहाव्रतसहित-सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।

नेत्र सुजानै लाल पीत वा, श्याम सब्ज अरु श्वेता।
तामें राग द्वेष उपजावै, परिग्रही जन चेता॥
इनि को त्याग सुत्याग परिग्रह, मन वच तन कर राखे।
या जुत सम्यक्चारित सोई, पूजों व्रत अभिलाखे॥

ॐ ह्रीं नेत्रेन्द्रियशुभाशुभविषयरहितपरिग्रहत्यागमहाव्रतसहित-सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।

तीन शब्द हैं सचित अचित अरु, मिश्र शब्द सुखदाई।
इनमें राग रु द्वेष करै मुनि, सोई परिग्रह भाई॥
तातैं इनके त्यागे परिग्रह, त्याग महाव्रत भाखे।
या जुत सम्यक्चारित सोई, पूजों व्रत अभिलाखे॥

ॐ ह्रीं श्रोत्रेन्द्रियशुभाशुभविषयरहितपरिग्रहत्यागमहाव्रतसहित-सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।

पांच भावना पंचम व्रत की, त्याग कहो इन मांहि।
इन जुत परिग्रहत्याग महाव्रत, शुद्ध होत शक नाहीं॥
पांच भावना सहित होय जो, महाव्रती मुनि भाखे।
या जुत सम्यक्चारित सोई, पूजों व्रत अभिलाखे॥

ॐ ह्रीं पंचभावनायुतपरिग्रहत्यागमहाव्रतसहितसम्यक्चारितत्राय अर्घ्यम्।

Shri Digambar Jain Swadhyay Mandir Trust, Songadh - 364250

(अडिल्ल छन्द)

चार हाथ भू शोध, पांव मुनिवर धरें।
इत उत देखन त्याग, काय निज वश करें॥
सो शुध ईर्यासमिति, महा सुखदाय है।
या जुत सम्यग्वृत्त, जजों शिवदाय है॥

ॐ ह्रीं यत्रतत्रावलोकनदोषरहितेर्यासमितियुतसम्यक्चारित्राय अर्घं

जब मुनि करें विहार, दयानिधि सार जी।
चालें नहीं सुताव, बड़े डग धार जी॥
ऐसो दोष निवार, समिति पग धार हैं।
या जुत सम्यग्वृत्त, जजों शिवदाय हैं॥

ॐ ह्रीं शीध्रगमनदोषरहितेर्यासमितिसहितसम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।

राग वचन सुन यती, राह चलते नहीं।
राग द्वेष कर चंचल, चित करते नहीं॥
तातें ईर्यासमिति, शुद्ध सुखदाय है।
या जुत सम्यग्वृत्त, जजों शिवदाय है॥

ॐ ह्रीं पथिगमनकालरागवचनश्रवणचित्तचांचल्यदोषरहितेर्या-समितिसहितसम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।

राह चलत वच, दुष्ट, श्रवण करके सही।
द्वेषभाव करि करें, चित को चल नहीं।
तब शुध ईर्यासमिति, होय हितदाय है।
या जुत सम्यग्वृत्त, जजों शिवदाय है॥

ॐ ह्रीं मार्गगमनकालदुष्टबचनश्रवणद्वेषरहितेर्यासमितिसहित-सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।

श्री दिगंबर जैन स्वाध्यायमंदिर ट्रस्ट, सोनगढ - ३६४२५०

राह चलत श्री मुनिवर, कबहुँ न यों करें।
पड़ी वस्तु पग कर तें, कबहुँ न लै धरें॥
सो यह दोष निवार, समिति सुध लाय हैं।
या जुत सम्यग्वृत्त, जजों शिवदाय हैं॥

ॐ ह्रीं मार्गस्थवस्तुग्रहणदोषरहितेर्यासमितिसहितसम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।

सर्व दोष तें रहित, मुनि मग जाय है।
जूड़ा के परमान, भूमि दिखवाय है॥
ऐसी समिति दयालु, भाव कर लाय है।
या जुत सम्यग्वृत्त, जजों शिवदाय हैं॥

ॐ ह्रीं सर्वदोषरहितेर्यासमितिसहितसम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।

जो जिस देश भँझार, वस्तु को नाम है।
सो ही कहना सत्य, वचन शुभधाम है॥
जनपद सत कथनीय, समिति सुखदाय है।
या जुत सम्यग्वृत्त, जजों शिवदाय हैं॥

ॐ ह्रीं जनपदसत्यभाषासमितिसहितसम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।

रौढ़िक जाको नाम, सकल जन यों कहे।
सोई कहना संवृति, सत सुधि में रहे॥
ऐसो भी वच भाषा, समिति सु जानिये।
या जुत सम्यग्वृत्त, जजे हित मानिये॥

ॐ ह्रीं संवृत्तिसत्यभाषासमितिसहितसम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।

चित्र मनुज हय हाथी, वृष के कीजिये।
फिर तिनको नर पशू, नाम रख लीजिये॥

Shri Digambar Jain Swadhyay Mandir Trust, Songadh - 364250

यही थापना सत्य वच जानिये।
या जुत सम्यग्वृत्त, जजों शिवदाय हैं॥

ॐ ह्रीं स्थापनासत्यभाषासमितिसहितसम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।

जाको जग में नाम, प्रसिद्ध सुगाईये।
सोई कहना नाम, दोष नहिं पाईये॥
नामसत्य यह सार, समिति बच जानिये।
या जुत सम्यग्वृत्त, जजों शिवदाय हैं॥

ॐ ह्रीं नामसत्यवचनभाषासमितिसहितसम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।

यह रँग काला पीला, लाल हरा सही।
ऐसा कहना रूप, सत्य भाषा सही॥
ये ही भाषा सत्य, वचन मन आनिये।
या जुत सम्यग्वृत्त, जजों शिवदाय हैं॥

ॐ ह्रीं रूपसत्यभाषासमितिसहितसम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।

यहै पदारथ बड़ा, यहै छोटा सही।
कहे अपेक्षा वचन, घने परगट मही॥
यही सत्य परतीति, समिति वच जानिये।
या जुत सम्यग्वृत्त, जजों शिवदाय हैं॥

ॐ ह्रीं प्रतीत्यसत्यभाषासमितिसहितसम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।

नैगमनय की रीति, वचन सो भाषिये।
कर मन ठीक जु वस्तु, हिये में राखिये॥
सत है सो व्यवहार, समिति वच आनिये।
या जुत सम्यग्वृत्त, जजों शिवदाय हैं॥

श्री दिगंबर जैन स्वाध्यायमंदिर ट्रस्ट, सोनगढ - ३६४२५०

ॐ ह्रीं व्यवहारसत्यभाषासमितिसहितसम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।

शक्र विषैं बल ऐसा, भू उल्टी करे।
भूमी जान अनादि, नाहिं कबहूँ टरे॥
ऐसा कहना संभावित सत जानिये।
या जुत सम्यग्वृत्त, जजों शिवदाय हैं॥

ॐ ह्रीं संभावनासत्यभाषासमितिसहितसम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।

मेरु, असंखे द्वीप, नरक सुर थल सही।
कंदमूल में जीव, अनंते जिन कही॥
भावसत्य संजोय, समिति वच जानिये।
या जुत सम्यग्वृत्त, जजों शिवदाय हैं॥

ॐ ह्रीं भावसत्यभाषासमितिसहितसम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।

का को किसकी उपमा, देकर भाषिये।
ज्यों दानी सुरवृक्ष, जगत में आंकिये॥
सो उपमा सत जान, समिति वच ठानिये।
या जुत सम्यग्वृत्त, जजों शिवदाय हैं॥

ॐ ह्रीं उपमासत्यभाषासमितिसहितसम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।

प्राण जाय तो जांय, असत भाषें नहीं।
भाषे तो सत्य वैन, जिसे जिनध्वनि कही॥
सो ही भाषासमिति, भव्य उर आनिये।
या जुत सम्यग्वृत्त, पूज्यतम मानिये॥

ॐ ह्रीं भाषासमितिसहितसम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।

Shri Digambar Jain Swadhyay Mandir Trust, Songadh - 364250

श्री दिगंबर जैन स्वाध्यायमंदिर ट्रस्ट, सोनगढ - ३६४२५०

पात्र निमित्त सु भोजन, जो दाता पचे।
तो यह दोष उद्देशिक, दाता सिर रचे॥
सो भोजन मुनि तजैं, एषणा लाय जी।
या जुत सम्यग्वृत्त, जजों शिवदाय जी॥

ॐ ह्रीं औद्देशिकदोषरहितैषणासमितिसहितसम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।

पात्र जनों को देख, रसोई जो करे।
दाता अध्यदि दोष, आपनै सिर धरे॥
सो भोजन मुनि तजैं, एषणा लाय जी।
या जुत सम्यग्वृत्त, जजों शिवदाय जी॥

ॐ ह्रीं अध्यदिदोषरहितैषणासमितिसहितसम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।

जो मुनि को दे भोजन, अचित मिलायकें।
'पूतिकर्म' यह दोष, सुदातृ उपाय कें॥
सो भोजन मुनि तजैं, एषणा लाय जी।
या जुत सम्यग्वृत्त, जजों शिवदाय जी॥

ॐ ह्रीं पूतिकर्मदोषरहितैषणासमितिसहितसम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।

मुनि को भोजन देय, असंयमि साथ जी।
तो दाता के दोष, 'मिश्र' विख्यात जी॥
सो भोजन मुनि तजैं, एषणा लाय जी।
या जुत सम्यग्वृत्त, जजों शिवदाय जी॥

ॐ ह्रीं मिश्रदोषरहितैषणासमितिसहितसम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।

थानान्तर भोजन दे, मुनि को लायकें।
तो स्थापित ले दोष, दातृ अधिकाय कें॥

श्री दिगंबर जैन स्वाध्यायमंदिर ट्रस्ट, सोनगढ - ३६४२५०

सो भोजन मुनि तजैं, एषणा लाय जी।
या जुत सम्यग्वृत्त, जजों शिवदाय जी॥

ॐ ह्रीं स्थापितदोषरहितैषणासमितिसहितसम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।

देव पितर को कियो, मुनी को दे सही।
तो दाता 'बलि' दोष, आप सिर ले सही।
सो भोजन मुनि तजें, एषणा लाय जी।
या जुत सम्यग्वृत्त, जजों शिवदाय जी॥

ॐ ह्रीं बलिदोषरहितैषणासमितिसहितसम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।

वेग वेग वा धीरे, मुनि को आहार दे।
'प्रावर्तित' अघ सोय, दातृ के सिर वँदे॥सो०॥

ॐ ह्रीं प्रावर्तितदोषरहितैषणासमितिसहितसम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।

मुनिभोजन का थान, प्रकाशित जो करे।
प्राविष्करण सु दोष, दातृ निज शिर धरे॥सो०॥

ॐ ह्रीं प्राविष्करणदोषरहितैषणासमितिसहितसम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।

विद्या क्रीत अहार, मुनी को दान दे।
क्रीत दोष तब दाता, अपने शीस ले॥सो०॥

ॐ ह्रीं क्रीतदोषरहितैषणासमितिसहितसम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।

ऋण कर कृत आहार, मुनी को दे सही।
सो दाता 'ऋण' दोष, आप सिर ले कही॥सो०॥

ॐ ह्रीं प्रामृष्यदोषरहितैषणासमितिसहितसम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।

Shri Digambar Jain Swadhyay Mandir Trust, Songadh - 364250

निजी अन्न बदलाय, दान मुनि को करे।
परिवर्तक अघ सोय, दातृ सिर पर धरे॥
सो भोजन मुनि तजें, एषणा लाय जी।
या जुत सम्यग्वृत्त, जजों शिवदाय जी॥

ॐ ह्रीं परिवर्तकदोषरहितैषणासमितियुतसम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।

अन्य ग्राम तें आय, दान मुनि को करे।
'अभिघट' कहि अघ सोय, आप सिर पर धरे॥सो०॥

ॐ ह्रीं अभिघटदोषरहितैषणासमितियुतसम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।

बँधी वस्तु मुख खोल, दान दे लाय जी।
'उद्भिन' अघ सिर दातृ, लेय अति भाय जी॥सो०॥

ॐ ह्रीं उद्भितदोषरहितैषणासमितिसहितसम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।

ऊपर खन की वस्तु, लाय मुनि दान दे।
'मालारोहण' नाम, दातृ अघ सिर सु ले॥सो०॥

ॐ ह्रीं मालारोहणदोषरहितैषणासमितिसहितसम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।

त्रास और भयकार, दान मुनि को करे।
'दोष अच्छेद्य' सुनाम, आपने सिर धरे॥सो०॥

ॐ ह्रीं अच्छेद्यदोषरहितैषणासमितिसहितसम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।

जाको धनी न होय, दान दे और जी।
'अनीशार्थ' अघ दातृ, लहे तिस ठौर जी॥सो०॥

ॐ ह्रीं अनीशार्थदोषरहितैषणासमितिसहितसम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।

श्री दिगंबर जैन स्वाध्यायमंदिर ट्रस्ट, सोनगढ - ३६४२५०

षोडश दोष सुजान, मुनी आहार में।
दाता पालें जान, सोय बुध सार में॥
सो भोजन मुनि तजें, एषणा लाय जी।
यो जुत सम्यग्वृत्त, जजों शिवदाय जी॥

ॐ ह्रीं षोडशोद्गमदोषरहितैषणासमितियुतसम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।

(चाल जोगीरासा)

जाय यती दाता के घर में, बालक नाहिं खिलावे।
नहिं शृङ्गारे नहिं पुचकारे, बालक को न रमावे॥
'धात्री' दोष तजें मुनिवर यह, समिति एषणा पाले।
या जुत सम्यक्चारित पूजों, सो मेरे अघ टाले॥

ॐ ह्रीं धातृदोषरहितैषणासमितिसहितसम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।

दाता के घर जाय यतीश्वर, इत उत बात बतावे।
देशान्तर की कहै वार्ता, तो मुनि दोष बढ़ावे॥
'दूत' दोष यह तजे महामुनि, समिति एषणा पाले।
या जुत सम्यक्चारित पूजों, सो मेरे अघ टाले॥

ॐ ह्रीं दूतदोषरहितैषणासमितिसहितसम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।

निमित ज्ञान की बात कहे मुनि, दाता को सुखदाई।
भोजन फेर गहे घर वाके, तो सिर दोष चढ़ाई॥
'निमित' दोष ऋषिराज तजें यहि, समिति एषणा पाले।
या जुत सम्यक्चारित पूजों, सो मेरे अघ टाले॥

ॐ ह्रीं निमित्तदोषरहितैषणासमितिसहितसम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।

Shri Digambar Jain Swadhyay Mandir Trust, Songadh - 364250

दाता के घर जाके मुनिवर, कह प्रभुता की बातें।
इस विधि से सुन्दरतम भोजन, कबहुँ यतीजन पाते॥
यह 'आजीवक' दोष तजें यति, समिति एषणा पाले।
या जुत सम्यक्चारित पूजों, सो मेरे अघ टाले॥

ॐ ह्रीं आजीवकदोषरहितैषणासमितिसहितसम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।

जो मुनि दाता को सुसुहावन, बात कहे घर जाई।
भोजन ताके आय करे ऋषि, तो अघ लेय उपाई॥
दोष 'वनीपक' तजि मुनि याको, समिति एषणा पालें।
या जुत सम्यक्चारित पूजों, सो मेरे अघ टाले॥

ॐ ह्रीं वनीपकदोषरहितैषणासमितिसहितसम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।

जो मुनि दाता के घर जाकर, औषधि भेद बतावे।
नाड़ी देख सुरोग बतावे, फिर भोजन को खावे॥
दोष 'चिकित्सा' होय त्याग के, समिति एषणा पाले।
या जुत सम्यक्चारित पूजों, सो मेरे अघ टाले॥

ॐ ह्रीं चिकित्सादोषरहितैषणासमितियुतसम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।

जो मुनि भोजन लेय क्रोधयुत, दाता के घर जाई।
तो मुनि के शिर दोष चढ़त है, सो भोजन दुखदाई॥
'क्रोध' दोष यह तजे मुनीश्वर, समिति एषणा पाले।
या जुत सम्यक्चारित पूजों, सो मेरे अघ टाले॥

ॐ ह्रीं क्रोधदोषरहितैषणासमितियुतसम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।

हम तपसी दीरघकुल धारी, ज्ञान धरें अधिकाई।
यों कह भोजन ले दाता घर, मानसहित हो भाई॥

'मान'दोष यह तज के मुनिवर, समिति एषणा पाले।
या जुत सम्यक्चारित पूजों, सो मेरे अघ टाले॥

ॐ ह्रीं मानदोषरहितैषणासमितियुतसम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।

भोजन को मुनि जाँय नगर में, दाता के घर जाई।
भोजन लेय कपट कर चित में, नाना छल दिखलाई॥
'माया'दोष तजें इसको मुनि, समिति एषणा पालें।
या जुत सम्यक्चारित पूजों, सो मेरे अघ टाले॥

ॐ ह्रीं मायादोषरहितैषणासमितियुतसम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।

लोभविवश हो दाता के घर, ले भोजन यति जाई।
स्वादलम्पटी रसना पीड्यो, तो शिर दोष चढ़ाई॥
'लोभ' दोष को तज के यतिवर, समिति एषणा पालें।
या जुत सम्यक्चारित पूजों, सो मेरे अघ टाले॥

ॐ ह्रीं लोभदोषरहितैषणासमितियुतसम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।

भोजन पहले दाता की थुति, जो मुनिराज उचारें।
तो अपने तप संयम माहीं, दूषण ही निरधारें॥
'पूरबथुति' अघ को तजके यों, समिति एषणा पालें।
या जुत सम्यक्चारित पूजों, सो मेरे अघ टाले॥

ॐ ह्रीं पूर्वस्तुतिदोषरहितैषणासमितियुतसम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।

भोजन दाता के घर ले मुनि, पीछे यह विधि लावे।
दाता की थुति करके भारी, आप दोष लिपटावे॥
'पीछे थुति' यह दोष त्याग मुनि, समिति एषणा पालें।
या जुत सम्यक्चारित पूजों, सो मेरे अघ टाले॥

ॐ ह्रीं पश्चात्स्तुतिदोषरहितैषणासमितियुतसम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।

શ્રી દિગંબર જૈન સ્વાધ્યાયમંદિર ટ્રસ્ટ, સોનગઢ - ૩૬૪૨૫૦

मुनि भोजन ले जिस दाता घर, ता प्रसन्नता काजे।
अपनी विद्याएं दिखला के, दोष आपको साजे॥
'विद्या'दोष छोड़ यह मुनिवर, समिति एषणा पाले।
या जुत सम्यक्चारित पूजों, सो मेरे अघ टाले॥

ॐ ह्रीं विद्यादोषरहितैषणासमितिसहितसम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।

मन्त्र तन्त्र जंत्रादिक अतिशय, चमत्कार बतलावें।
पीछे भोजन लेंय यतीश्वर, तो शिर पाप बँधावें॥
'मन्त्र'दोष यह तज के योगी, समिति एषणा पालें।
या जुत सम्यक्चारित पूजों, सो मेरे अघ टाले॥

ॐ ह्रीं मन्त्रदोषरहितैषणासमितिसहितसम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।

जो मुनि काजल नेत्रनि कों दे, चूरण आदि बतावे।
यों कर भोजन ले दाता घर, तो सिर दोष बँधावे॥
'चूरण' अघ को छोड़ महामुनि, समिति एषणा पाले।
या जुत सम्यक्चारित पूजों, सो मेरे अघ टाले॥

ॐ ह्रीं चूर्णदोषरहितैषणासमितिसहितसम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।

वशीकरण आदिक की युक्ती, गृहियों को दिखलावे।
पीछे से मुनि भोजन लेवे, तो संजम मल पावे॥
'मूलकर्म' दूषण तज के यह, समिति एषणा पाले।
या जुत सम्यक्चारित पूजों, सो मेरे अघ टाले॥

ॐ ह्रीं मूलकर्मदोषरहितैषणासमितिसहितसम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।

શ્રી દિગંબર જૈન સ્વાધ્યાયમંદિર ટ્રસ્ટ, સોનગઢ - ૩૬૪૨૫૦

भोजन भक्ष्य अभक्ष्य किसो है, यों शंका करि खाये।
तो मुनि अपने संजम में यों, शंकित दोष लगावे॥
ऐसो 'शंकित' दोष त्याग मुनि, समिति एषणा पाले।
या जुत सम्यक्चारित पूजों, सो मेरे अघ टाले॥

ॐ ह्रीं शंकितदोषरहितैषणासमितियुतसम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।

दाता के कर चिकने होवें, चिकने वासन जोवें।
तामें भोजन जो मुनि लेवें, तो सदोष वे होवें॥
'मृक्षित'दोष तजें यह मुनिवर, समिति एषणा पाले।
या जुत सम्यक्चारित पूजों, सो मेरे अघ टाले॥

ॐ ह्रीं मृक्षितदोषरहितैषणासमितियुतसम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।

सचित वस्तु पर रक्खा भोजन, मुनिवर कबहुँ न खावें।
अपने संजम भार लाभ या, सावधान चित लावें॥
यह 'निक्षिप्त'दोष तजि के मुनि, समिति एषणा पाले।
या जुत सम्यक्चारित पूजों, सो मेरे अघ टाले॥

ॐ ह्रीं निक्षिप्तदोषरहितैषणासमितियुतसम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।

भोजन ढांके सचित वस्तु सों, तो यति नाहीं खावे।
ऐसो कारण आय मिले तो, जीमत ही तज जावे॥
'पिहित' दोष को छोड़ यतीश्वर, समिति एषणा पाले।
या जुत सम्यक्चारित पूजों, सो मेरे अघ टाले॥

ॐ ह्रीं पिहितदोषरहितैषणासमितियुतसम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।

पूरब नेह थकी भोजन लें, तो मुनि दूषण पावे।
मोहवचन मुख तें आलापे, सो संजम खो जावे॥

Shri Digambar Jain Swadhyay Mandir Trust, Songadh - 364250

'हार'दोष यह त्याग यतीश्वर, समिति एषणा पाले।
या जुत सम्यक्चारित पूजों, सो मेरे अघ टाले॥

ॐ ह्रीं हारदोषरहितैषणासमितियुतसम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।

सूतक रोगी वृद्ध बाल जो, जलती अग्नि बुझावे।
गर्भवती तिय होय नपुंसक, इनि कर मुनि नहिं खावे॥
'दायक'दोष तजें मुनिनायक, समिति एषणा पाले।
या जुत सम्यक्चारित पूजों, सो मेरे अघ टाले॥

ॐ ह्रीं दायकदोषरहितैषणासमितियुतसम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।

आँचल सों तज बालक नारी, जो मुनि को पड़गाहे।
तो याके कर को भोजन ऋषि, आय कबहुँ नहिं खाहे॥
'सम्व्यवहरण'दोष तजि के मुनि, समिति एषणा पाले।
या जुत सम्यक्चारित पूजों, सो मेरे अघ टाले॥

ॐ ह्रीं संव्यवहरणदोषरहितैषणासमितियुतसम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।

वस्तु सचित्त अचित्त मिली जो, भोजन में मुनि खावे।
तो उसके अतिदूषण लागे, जग में निन्दा पावे॥
'मिश्र'दोष यह तजै मुनीश्वर, समिति एषणा पाले।
या जुत सम्यक्चारित पूजों, सो मेरे अघ टाले॥

ॐ ह्रीं उन्मिश्रदोषरहितैषणासमितियुतसम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।

जली और अधपक्की चीजें, वा अप्रासुक लाई।
भोजन में यतीवर को देवे, तो लेवें न कदाई॥
दोष 'अपरिणत' को मुनि त्यागें, समिति एषणा पाले।
या जुत सम्यक्चारित पूजों, सो मेरे अघ टाले॥

શ્રી દિગંબર જૈન સ્વાધ્યાયમંદિર ટ્રસ્ટ, સોનગઢ - ૩૬૪૨૫૦

ॐ ह्रीं अपरिणतदोषरहितैषणासमितियुतसम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।

पात्र खड़ी हरताल गेरू से, यदि लिपटा हो भाई।
भाजी खिचड़ी कढ़ी आदि या, लिपटी देय दिखाई॥
'लिप्त'दोष मानें सत साधू, समिति एषणा पाले।
या जुत सम्यक्चारित पूजों, सो मेरे अघ टाले॥

ॐ ह्रीं लिप्तदोषरहितैषणासमितियुतसम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।

वस्तु हात से द्रवित होये जो, या प्रदत्त तज खावें।
तो मुनि नायक अपने संयम, माहीं दोष लगावें॥
'त्यजन'दोष यह तजकें मुनिवर, समिति एषणा पाले।
या जुत सम्यक्चारित पूजों, सो मेरे अघ टाले॥

ॐ ह्रीं परित्यजनदोषरहितैषणासमितियुतसम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।

उष्ण माहिं शीतल शीतल में, उष्ण मिला कर खावें।
तो अपनो सत संजम नीको, ताके दोष लगावें॥
दोष 'सँयोजन' नाम त्याग गुरु, समिति एषणा पाले।
या जुत सम्यक्चारित पूजों, सो मेरे अघ टाले॥

ॐ ह्रीं संयोजनदोषरहितैषणासमितियुतसम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।

बत्तिस ग्रास मुनी का भोजन, सो ही उत्तम होई।
तासें अधिक न मुनिवर खावे, आज्ञा भंग न सोई।
'अप्रमाण' इस अघ को छोड़ें, समिति एषणा पाले।
या जुत सम्यक्चारित पूजों, सो मेरे अघ टाले॥

ॐ ह्रीं अप्रमाणदोषरहितैषणासमितियुतसम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।

Shri Digambar Jain Swadhyay Mandir Trust, Songadh - 364250

मीठो भोजन रुचि से खावे, दाता को जु सरावे।
बहु आसक्त होय भोजन ले, सो सिर दोष मढ़ावे॥
दोष 'अँगार' तजें गुरु याको, समिति एषणा पाले।
या जुत सम्यक्चारित पूजों, सो मेरे अघ टाले॥

ॐ ह्रीं अङ्गारदोषरहितैषणासमितियुतसम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।

जो भोजन मन चाहत नाहीं, खावत अरुचि कराहे।
दाता की निंदा फिर ठानें, तो निज संजम दाहे॥
'धूम'दोष याको मुनि त्यागें, समिति एषणा पाले।
या जुत सम्यक्चारित पूजों, सो मेरे अघ टाले॥

ॐ ह्रीं धूमदोषरहितैषणासमितियुतसम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।

(दोहा)

ऐसे तेइस दुगुन मल, टालत हैं मुनिराय।
तब भोजन करते सही, ते गुरु जजों सुभाय॥

ॐ ह्रीं षट्चत्वारिंशद्दोषरहितैषणासमितियुतसम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।

मुनि के भोजन करते नभ से, काक वीट कर जावे।
देखे मुनि तो भोजन छांड़े, हिये खेद ना पावे॥
'काक'दोष यह तजें यतीश्वर, समिति एषणा पाले।
या जुत सम्यक्चारित पूजों, सो मेरे अघ टाले॥

ॐ ह्रीं काकान्तरायरहितैषणासमितियुतसम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।

अपने पग जो अशुचिवस्तुसे, लिपटे होंय कदाई।
देखे मुनि तो भोजन छांड़े, अंतराय गिन भाई॥

શ્રી દિગંબર જૈન સ્વાધ્યાયમંદિર ટ્રસ્ટ, સોનગઢ - ૩૬૪૨૫૦

दोष 'अशौच्य' तजें मुनि याको, समिति एषणा पाले।
या जुत सम्यक्चारित पूजों, सो मेरे अघ टाले॥

ॐ ह्रीं अशौच्यान्तरायरहितैषणासमितियुतसम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।

जो मुनि भोजन को मग जाते, करता वमन निहारे।
तो तादिन आहार तजे यह, अंतराय सु विचारे॥
'छर्दि' दोष को तजकें मुनिवर, समिति एषणा पाले।
या जुत सम्यक्चारित पूजों, सो मेरे अघ टाले॥

ॐ ह्रीं छर्द्यन्तरायरहितैषणासमितियुतसम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।

रुदन करन्ते पर को देखें, भोजन बेला कोई।
अन्तराय तो होत मुनी को, भोजन करे न सोई॥
'रुदन'दोष यह तजें महामुनि, समिति एषणा पाले।
या जुत सम्यक्चारित पूजों, सो मेरे अघ टाले॥

ॐ ह्रीं रुदनान्तरायरहितैषणासमितियुतसम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।

निज पर का मुनि लोहू देखें, भोजन वेला कोई।
अन्तराय तो लहें सुगुरुवर, समताधर चित सोई॥
'रुधिर'दोष यह तजें मुनीश्वर, समिति एषणा पाले।
या जुत सम्यक्चारित पूजों, सो मेरे अघ टाले॥

ॐ ह्रीं रुधिरान्तरायरहितैषणासमितियुतसम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।

अश्रुपात निज पर के देखें, भुक्तिकाल मुनिराई।
अन्तराय तो गिनें जगद्गुरु, करुणासागर भाई॥
'अश्रुपात'दूषण यह तजकें, समिति एषणा पाले।
या जुत सम्यक्चारित पूजों, सो मेरे अघ टाले॥

ॐ ह्रीं अश्रुपातान्तरायरहितैषणासमितिसहितसम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।

Shri Digambar Jain Swadhyay Mandir Trust, Songadh - 364250

શ્રી દિગંબર જૈન સ્વાધ્યાયમંદિર ટ્રસ્ટ, સોનગઢ - ૩૬૪૨૫૦

भोजनहेतु पात्र को जंघा, ऊपर गेहि चढ़ावे।
तो मुनिनाथ तजें भोजन को, अन जल पियें न खावें॥
'जंघा'नाम दोष तजकें यति, समिति एषणा पाले।
या जुत सम्यक्चारित पूजों, सो मेरे अघ टाले॥

ॐ ह्रीं जंघास्पर्शान्तरायरहितैषणासमितियुतसम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।

साधु हाथ यदि घुटने नीचे, का अस्पर्श लहावे।
अन्तराय तो माने यतिवर, भोजनगृद्धि हटावे॥
तज 'प्रावृत्य'दोष को निश्चय, समिति एषणा पाले।
या जुत सम्यक्चारित पूजों, सो मेरे अघ टाले॥

ॐ ह्रीं प्रावृत्यान्तरायरहितैषणासमितियुतसम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।

नाभीतल नीचा शिर करके, द्वार निकाल बुलावे।
अन्तराय तो माने यति जो, आगमविधि को ध्यावे॥
'नाभ्यधोनिर्गमन' दोष तजि, समिति एषणा पाले।
या जुत सम्यक्चारित पूजों, सो मेरे अघ टाले॥

ॐ ह्रीं नाभ्यधोनिर्गमनरहितैषणासमितियुतसम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।

तजी वस्तु भोजन में आई, निश्चय से जब जाने।
अन्तराय मानें सत्साधू, आकुलता नहिं आने॥
प्रत्याख्यात जु दोष तजें यह, समिति एषणा पालें।
या जुत सम्यक्चारित पूजों, सो मेरे अघ टाले॥

ॐ ह्रीं प्रत्याख्यातान्तरायरहितैषणासमितियुतसम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।

जीवघात निज पर कर सेती, भोजन - बेला होई।
तो मुनि देख तजें भोजन को, दयाभाव धर सोई॥

Shri Digambar Jain Swadhyay Mandir Trust, Songadh - 364250

શ્રી દિગંબર જૈન સ્વાધ્યાયમંદિર ટ્રસ્ટ, સોનગઢ - ૩૬૪૨૫૦

'जन्तूवध'दूषण तज के मुनि, समिति एषणा पालें।
या जुत सम्यक्चारित पूजों, सो मेरे अघ टाले॥

ॐ ह्रीं जन्तुवधान्तरायरहितैषणासमितियुतसम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।

भोजन करते हाथों में से, काक ग्रास ले जावे।
तो मुनिनाथ तजें भोजन को, ता दिन फेरि न खावे॥
'काकपिण्ड' यह दोष तजें मुनि, समिति एषणा पालें।
या जुत सम्यक्चारित पूजों, सो मेरे अघ टाले॥

ॐ ह्रीं काकपिंडान्तरायरहितैषणासमितियुतसम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।

भोजन करते ग्रास पड़े भू, दातृ पात्र कर सेती।
तो मुनि जीमन नाहिं करे फिर, है मर्यादा येती॥
'पाणिपात' दूषण तज के मुनि, समिति एषणा पालें।
या जुत सम्यक्चारित पूजों, सो मेरे अघ टाले॥

ॐ ह्रीं पाणिपातान्तरायरहितैषणासमितियुतसम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।

भोजन करते पाणिपात्र में, जीव मरे यदि आई।
तो ऋषिराज तजें भोजन को, करुणाभाव उपाई॥
'पाणिपात्र जियघात' दोष तज, समिति एषणा पालें।
या जुत सम्यक्चारित पूजों, सो मेरे अघ टालें॥

ॐ ह्रीं पाणिपात्रजन्तुघातान्तरायरहितैषणासमितियुतसम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।

भोजन वेला आमिष देखें, तो भोजन गुरु छांड़े।
तन विरकत संयम के लोभी, पर में राग न मांड़े॥

Shri Digambar Jain Swadhyay Mandir Trust, Songadh - 364250

'आमिषदर्शन' दोष त्याग के, समिति एषणा पाले।
या जुत सम्यक्चारित पूजों, सो मेरे अघ टाले॥

ॐ ह्रीं आमिषादिदर्शनान्तरायरहितैषणासमितियुतसम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।

भोजन वेला जगद्गुरु को, होय उपद्रव आई।
अन्तराय मानें जीमन में, समताभाव समाई॥
'दोषोपसर्ग' त्याग के मुनिवरसमिति एषणा पाले।
या जुत सम्यक्चारित पूजों, सो मेरे अघ टाले॥

ॐ ह्रीं उपसर्गान्तरायरहितैषणासमितियुतसम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।

भोजन करते पगों बीच से, पञ्चेन्द्रिय निकसावे।
तो आहार न लेवें गुरुवर, संयम नांहि गमावे॥
'पदान्तरजियगमन' दोष तज, समिति एषणा पालें।
या जुत सम्यक्चारित पूजों, सो मेरे अघ टालें॥

ॐ ह्रीं पादान्तरजीवगमनान्तरायरहितैषणासमितियुतसम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।

भोजन करते दाता कर से, पात्र यदी गिर जावे।
तो आहार तजे गुरु ज्ञानी, संयम भाव लियावे॥
'पात्रसम्पतन' दोष त्याग के, समिति एषणा पाले।
या जुत सम्यक्चारित पूजों, सो मेरे अघ टाले॥

ॐ ह्रीं भाजनसम्पतनान्तरायरहितैषणासमितियुतसम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।

भोजन करते अपने तन से, मुनि जो मल निकसावे।
तो आहार तजे गुरु ज्ञानी, उर जिन आज्ञा ध्यावे॥

दोष 'उचार त्याग' वृषलोभी, समिति एषणा पाले।
या जुत सम्यक्चारित पूजों, सो मेरे अघ टाले॥

ॐ ह्रीं उच्चारत्यागान्तरायरहितैषणासमितियुतसम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।

भोजन करते अपने तन से निकले मूत्र अजाने।
तो आहार तजे गुरु ज्ञानी, जिनधुनि रहस पिछाने॥
दोष 'प्रसार' त्याग के मुनिवर,समिति एषणा पाले।
या जुत सम्यक्चारित पूजों, सो मेरे अघ टाले॥

ॐ ह्रीं प्रसारान्तरायरहितैषणासमितियुतसम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।

भोजनहेतु भूल से यदि मुनि, शूद्रों के घर जावे।
तो गुरुदेव तजें जमीन को, तिस दिन अनशन लावे॥
दोष 'अभोजनगृह' प्रवेश तज, समिति एषणा पाले।
या जुत सम्यक्चारित पूजों, सो मेरे अघ टाले॥

ॐ ह्रीं अभोजनगृहान्तरायरहितैषणासमितियुतसम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।

मूर्च्छा खाय गिरे यति अथवा, पर को मूर्च्छित देखे।
भवसागर के तीर गये यति, भोजन भक्ष्य न लेखे॥
'पतन' दोष को त्याग मुनीश्वर, समिति एषणा पाले।
या जुत सम्यक्चारित पूजों, सो मेरे अघ टाले॥

ॐ ह्रीं पतनान्तरायरहितैषणासमितियुतसम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।

भोजन करते कर्मयोग भू, बैठ जांय मुनिराजा।
अन्तराय माने भोजन में, वास करें हित काजा॥

'उपवेशन' यह दोष त्याग गुरु, समिति एषणा पाले।
या जुत सम्यक्चारित पूजों, सो मेरे अघ टाले॥

ॐ ह्रीं उपवेशनान्तरायरहितैषणासमितियुतसम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।

कूकर आदिक हिंसक प्राणी, दंश करत यति जोवें।
अन्तराय माने गुरुनायक, कायर चित्त न होवें॥
'श्वादिदंश' यह दोष त्याग के समिति एषणा पाले।
या जुत सम्यक्चारित पूजों, सो मेरे अघ टाले॥

ॐ ह्रीं श्वादिदंशान्तरायरहितैषणासमितियुतसम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।

भोजन वेला सिद्ध भक्ति को, कर मुनि शीश नवावे।
कर से यदि भूमी छू जावे, अन्तराय तब ध्यावे॥
'भूमिस्पर्श' दोष तज करके समिति एषणा पाले।
या जुत सम्यक्चारित पूजों, सो मेरे अघ टाले॥

ॐ ह्रीं भूमिस्पर्शान्तरायरहितैषणासमितियुतसम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।

भोजन बिरियां अपना परका, यदि खकार लख लेई।
अन्तराय माने गुरु ज्ञानी, जिनवाणी जिन सेई॥
'निष्ठीवन' यह दोष छांड़ मुनि,समिति एषणा पालें।
या जुत सम्यक्चारित पूजों, सो मेरे अघ टालें॥

ॐ ह्रीं निष्ठीवनान्तरायरहितैषणासमितियुतसम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।

भोजन काल निजोदर से यदि, कृमि निकली यति जाने।
अन्तराय भोजन में माने, खेद नहीं उर आने॥

'उदरकृमीनिर्गमन' दोष तज, समिति एषणा पाले।
या जुत सम्यक्चारित पूजों, सो मेरे अघ टाले॥

ॐ ह्रीं उदरकृमीनिर्गमनान्तरायरहितैषणासमितियुतसम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।

दाता के बिन दीने भोजन, मुनि चाहे मन मांही।
अङ्गीकार करें तन मन से, ता शिर दोष बढ़ाही॥
दोष 'अदत्तग्रहण' तज के मुनि, समिति एषणा पाले।
या जुत सम्यक्चारित पूजों, सो मेरे अघ टाले॥

ॐ ह्रीं अदत्तान्तरायरहितैषणासमितियुतसम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।

भोजन बेला यति वा पर पै, वार करे यदि कोई।
तो मुनि तादिन अनशन धारे, कर्मविजय हित सोई॥
दोष 'प्रहार' तजें मुनि नायक,समिति एषणा पाले।
या जुत सम्यक्चारित पूजों, सो मेरे अघ टाले॥

ॐ ह्रीं प्रहारान्तरायरहितैषणासमितियुतसम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।

भोजन को जाते यदि पुरमें, अग्नि लगी हो भाई।
अन्तराय तो गिनें यतीश्वर, भोजन नांही कराई॥
'ग्रामदाह' यह दोष त्याग के, समिति एषणा पाले।
या जुत सम्यक्चारित पूजों, सो मेरे अघ टाले॥

ॐ ह्रीं ग्रामदाहान्तरायरहितैषणासमितियुतसम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।

मार्ग पड़ी पग अड़ी वस्तु जो, ले मुनिराज उठाई।
तो उनके वर संयम मांही, दोष लगे अधिकाई॥

'पादग्रहण' यह दोष दूर कर, समिति एषणा पाले।
या जुत सम्यक्चारित पूजों, सो मेरे अघ टाले॥

ॐ ह्रीं पादग्रहणान्तरायरहितैषणासमितियुतसम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।

राह पड़ी जो वस्तु आप कर, लें मुनिराज उठाई।
अन्तराय जो गिनें जैन गुरु, लोभ धरें न कदाई॥
'करग्रहण' यह दोष त्याग के, समिति एषणा पाले।
या जुत सम्यक्चारित पूजों, सो मेरे अघ टाले॥

ॐ ह्रीं करग्रहणान्तरायरहितैषणासमितियुतसम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।

ऐसे बत्तिस अन्तराय जो, भोजन कालिक पाले।
तो मुनि संयम पालें अपने, गुणलोभी अघ टाले॥
समिति एषणा ताके शुध हो, स्वर्ग मोक्ष सुखदाई।
यो जुत सम्यक्चारित पूजों, जो मेरे मन भाई॥

ॐ ह्रीं द्वात्रिंशदन्तरायरहितैषणासमितियुतसम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।

(चौपाई छन्द)

भोजन में 'नख' निकले सोय, अन्तराय तो गुरु को होय।
समिति एषणा तब शुध जान, या जुत चारित पूज्य सुमान॥

ॐ ह्रीं नखमलरहितैषणासमितियुतसम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।

'केश' नीसरे भोजन माँय, अन्तराय तो यती मनाँय।
समिति एषणा तब शुध जान, या जुत चारित पूज्य सुमान॥

ॐ ह्रीं केशमलरहितैषणासमितियुतसम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।

श्री दिगंबर जैन स्वाध्यायमंदिर ट्रस्ट, सोनगढ - ३६४२५०

'मृतप्राणी' भोजन में जोय, तो मुनि भोजन छांड़े सोय।
समिति एषणा तब शुध जान, या जुत चारित पूज्य सुमान॥

ॐ ह्रीं मृतजीवदर्शनदोषरहितैषणासमितियुतसम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।

भोजन समय 'अस्थि' यदि जोय, तो यति भोजन त्यागे सोय।
समिति एषणा तब शुध जान, या जुत चारित पूज्य सुमान॥

ॐ ह्रीं कीकशदर्शनमलरहितैषणासमितियुतसम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।

जीमत 'राघ' नजर जो आय, तो योगी आहार न पाय।
समिति एषणा तब शुध जान, या जुत चारित पूज्य सुमान॥

ॐ ह्रीं पूयमलरहितैषणासमितियुतसम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।

भोजन करत 'चर्म' अवलोय, तो योगी आहार न होय।
समिति एषणा तब शुध जान, या जुत चारित पूज्य सुमान॥

ॐ ह्रीं चर्मदर्शनमलरहितैषणासमितियुतसम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।

जीमत यदी 'रुधिर' अवलोय, तो आहार तजे यति सोय।
समिति एषणा तब शुध जान, या जुत चारित पूज्य सुमान॥

ॐ ह्रीं रुधिरदर्शनमलरहितैषणासमितियुतसम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।

भोजनवेला 'आमिष' जोय, तो मुनिभोजन नांही होय।
समिति एषणा तब शुध जान, या जुत चारित पूज्य सुमान॥

ॐ ह्रीं आमिषदर्शनमलरहितैषणासमितियुतसम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।

भोजन में यदि 'कणा' दिखाय, तो मुनि भोजन नांहीं खाय।
समिति एषणा तब शुध जान, या जुत चारित पूज्य सुमान॥

ॐ ह्रीं कणादर्शनमलरहितैषणासमितियुतसम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।

Shri Digambar Jain Swadhyay Mandir Trust, Songadh - 364250

जीमत 'तिल के अंश' दिखांय, तो मुनिवर आहार न खांय।
समिति एषणा तब शुध जान, या जुत चारित पूज्य सुमान॥

ॐ ह्रीं तिलकणदर्शनमलरहितैषणासमितियुतसम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।

भोजन में यदि 'बीज' दिखांय, तो भोजन नांही यति खांय।
समिति एषणा तब शुध जान, या जुत चारित पूज्य सुमान॥

ॐ ह्रीं बीजदर्शनदोषरहितैषणासमितियुतसम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।

'साबित फल' भोजन में आय, ऋषि अनशन धारे हरषाय।
समिति एषणा तब शुध जान, या जुत चारित पूज्य सुमान॥

ॐ ह्रीं फलदर्शनमलरहितैषणासमितियुतसम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।

'कन्दवस्तु' भोजन में आय, अन्तराय मानें मुनिराय।
समिति एषणा तब शुध जान, या जुत चारित पूज्य सुमान॥

ॐ ह्रीं कन्दमूलदोषरहितैषणासमितियुतसम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।

वस्तु देख के यती उठांय, समिति एषणा शुद्ध करांय।
या जुत सम्यक्चारित सोय, मैं पूजों वसु द्रव्य सँजोय॥

ॐ ह्रीं आदानसमितियुतसम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।

मुनि जो वस्तु भूमि में धरें, तो जियरक्षा में चित धरें।
निक्षेपणसमिती चित लाय, या जुत चारित जजों सुखाय॥

ॐ ह्रीं निक्षेपणसमितियुतसम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।

तनमल जँह भू क्षेपे यती, भूशुद्धी देखें शुभमती।
यह व्युत्सर्ग समिति मन लाय, या जुत चारित पूज्य सुभाय॥

ॐ ह्रीं व्युत्सर्गसमितियुतसम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।

श्री दिगंबर जैन स्वाध्यायमंदिर ट्रस्ट, सोनगढ - ३६४२५०

मनविकल्प जिनध्वनिसम करें, और ठौर नांही मन धरें।
मनोगुप्ति धारें मुनिराय, या जुत वृत्त जजों सत भाय॥

ॐ ह्रीं मनोगुप्तिसहितसम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।

मुनिवच जिन आज्ञा सम होय, तातें पाप लगे ना कोय।
वचनगुप्ति पालें मुनिराय, या जुत वृत्त जजों शिर नाय॥

ॐ ह्रीं वचनगुप्तिसहितसम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।

तनको मुनि वश राखें सोय, बिना प्रयोजन चल ना होय।
कायगुप्ति सो जानो सही, या जुत वृत्त जजों शुभ मही॥

ॐ ह्रीं कायगुप्तिसहितसम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।

पांच महाव्रत समिति जु पांच, तीन गुप्ति मिल चारित सांच।
यों तेरहविध चारित जान, पूजों मनवच अर्घ सुआन॥

ॐ ह्रीं श्रीत्रयोदशप्रकारसम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।

जयमाला

(दोहा)

सम्यक्चारित मोक्ष को, मारग और न कोय।
पापपन्थ तज सर्व ही, चारित की विधि जोय॥

(वेशरी छन्द)

सम्यक्चारित भवदधिनावा, सिद्धक्षेत्र धरि देन स्वभावा।
परिग्रहधारि लहे न याको, मैं पूजों मन वच तन ताको॥

Shri Digambar Jain Swadhyay Mandir Trust, Songadh - 364250

मोहराय जीतन को जावे, जो चारित्र कवच तन लावे।
ध्यावत हैं सुर खग नर याको, मैं पूजों मन वच तन ताको॥

सम्यक्चारित मोक्ष निशाना, या बिन होय न कर्मन हाना।
या बिन मोक्ष न होवे काको, मैं पूजों मन वच तन ताको॥

चारितग्रहण वीर का कामा, कायर पै न सधे गुणधामा।
निर्मोही धारत हैं याको, मैं पूजों मन वच तन ताको॥

शंकासहित जीव बलहीना, ते कँह धार सकें यह दीना।
महापुरुष धारत हैं याको, मैं पूजों मन वच तन ताको॥

कामीजन तो देखत लज्जें, शीलवान धर्मी जन सजें।
चारित उपमा दीजे काको, मैं पूजों मन वच तन ताको॥

चारित को चक्रीधर चाहें, सुर खग इन्द्र भावना भाहें।
निकटभव्य धारत हैं याको, मैं पूजों मन वच तन ताको॥

चारित चरमशरीरी धारें, चारित से कर्मारि विदारें।
कामदेव से धारत याको, मैं पूजों मन वच तन ताको॥

चारित नाम सुनत हरषाये, सो जिय चारित महिमा पावे।
चारित धारत है धनि वाको, मैं पूजों मन वच तन ताको॥

यह चारित पीडाहर भाई, धारक शक्रविभव को पाई।
शिववांछक सेवत हैं याको, मैं पूजों मन वच तन ताको॥

चारित सर्वहितू लखि भाई, चारित सर्वोत्तम सुखदाई।
मुनिजन पूजत ध्यावत याको, मैं पूजों मन वच तन ताको॥

શ્રી દિગંબર જૈન સ્વાધ્યાયમંદિર ટ્રસ્ટ, સોનગઢ - ૩૬૪૨૫૦

चारित को हम भी ललचावें, क्या जानें किस भव में पावें।
इस भव करत भावना याको, मैं पूजों मन वच तन ताको॥

चारित का शरणा जिन पाया, ताने निजभव सफल बनाया।
शक्तिप्रद हितकर गिन याको, मैं पूजत मन वच तन ताको॥

(दोहा)

सुर नर पूजत ताहि को, जो चारित्र लहाय।
सो चारित महिमा अतुल, नमों सदा शिर नाय॥

ॐ ह्रीं श्री सम्यक्चारित्राय जयमालार्घ्यम्।

समुच्चय जयमाला

(दोहा)

सम्यग्दर्शन ज्ञान सह, चारित लेहु मिलाय।
मोक्षमार्ग ये तीन ही, मैं पूजों शिर नाय॥

(चौपाई)

रत्नत्रय शिवमारग जान, या विन मोक्षमार्ग ना आन।
ये ही शिवदायक मन लाय, मोकों भवहर होय सहाय॥

(चाल मुनियानन्द की)

भुवन त्रय मुकुट शुभ, रतन त्रय जानिये।
तीन जग जीव थुति, करें हित मानिये॥

Shri Digambar Jain Swadhyay Mandir Trust, Songadh - 364250

तास फल पापमल, धोय निज शुध करें।
मैं जजों भाव तैं, कार्य वांछित सरें॥

तीन जग भ्रम्यो विन, रतनत्रय पाय जी।
मिली नहिं सेवकी, कहुँ सुखदाय जी॥

अबै शुभ दिन भयो, भक्ति इनकी करें।
मैं जजों भाव तैं, कर्म वांछित सरें॥

चक्रि नरराज से, रतनत्रय काज जी।
तजें सब जगत सुख, दाय बहुराज जी॥

छोड़ि सब परिग्रह, वास वनमें करें।
मैं जजों भाव तैं, कार्य वांछित सरें॥

बिना रतनत्रयी, तीर्थकर देव जी।
सिद्ध पद ना लहें, करें बहु भेव जी॥

तास तें रतन त्रय, एक शिवफल करे।
मैं जजों भाव तैं, कार्य वांछित सरें॥

भये रतन त्रय पाय, देव गणधर सही।
रतनत्रय लाभ तैं, पदवि मुनि की लही॥

सकल सुख देय कर, रतनत्रय अघ हरे।
मैं जजों भाव तैं, कार्य वांछित सरें॥

रतनत्रय तीर्थसम, जगत में सार जी।
रतनत्रय देय भव, तार अविकार जी॥

रतनत्रय गुरु हम, पाय तप को करें।
मैं जजों भाव तैं, कार्य वांछित सरें॥

रतनत्रय धर्म सब, हरे सब कर्म जी।
रतनत्रय ज्योति तैं, मिटे बहु भर्म जी॥

रतनत्रय रूप लखि, मुकतिनार वर करे।
मैं जजों भाव तैं, कार्य वांछित सरें॥

रतनत्रय छत्रता, शिर फिरे आय जी।
जीव सो जगत तजि, मुक्तिराज्य पाय जी॥

रतनत्रय लक्ष्मि की, चाह हरि सुर करें।
मैं जजों भाव तैं, कर्म वांछित सरें॥

रतनत्रय रविसदृश, रागतम नाशि है।
रतनत्रय नेत्र तैं, तत्त्व सुप्रकाश है॥

रतनत्रय मुकुट शिव, नार वल्लभ करे।
मैं जजों भाव तैं, कार्य वांछित सरें॥

रतनत्रय राह को, नग्न जावे सही।
किन्तु जो परिग्रही, तास निभतो नहीं॥

रतनत्रय देहि भजि, आप सम जो करे।
मैं जजों भाव तैं, कार्य वांछित सरें॥

रतनत्रय एक जग, मांहि है सार जी।
कीजिये कहा कहों, और निरधार जी॥

रतनत्रय नाव भव, अब्धि पारे करे।
मैं जजों भाव तैं, कार्य वांछित सरें॥

विरत यह रतन त्रय, करे धन्य सोय जी।
या थकी फेर ना, जन्म मृत्यु होय जी॥

विरत यह रतनत्रय, मोक्ष दे हित करे।
मैं जजों भाव तैं, कार्य वांछित सरें॥

करो भवि रतनत्रय, विरत मन लाय जी।
समय यह कठिन कर, मिलो शुभ आय जी॥

मनुषतन उच्चकुल, याहि सों ही करे।
मैं जजों भाव तैं, कार्य वांछित सरें॥

विरत की विधी यों, आर्ष बतलाय जी।
वास त्रय आदि अन्त, एकभुक्ति पाय जी॥

रीति उत्कृष्ट सो, भव्य मन में धरें।
मैं जजों भाव तैं, कार्य वांछित सरें॥

होय ना शक्ति उत्, कृष्ट की तो सुनो।
आदि जुगमान इक, पारणा दिन गिनो॥

नांहि मध्य शक्ति अंत, आदि अनशन करे।
मैं जजों भाव तैं, कर्म वांछित सरें॥

होय अल्पशक्ति तो, वह करे येम जी।
मध्य इक वास अन्त, पारना जीम जी॥

શ્રી દિગંબર જૈન સ્વાધ્યાયમંદિર ટ્રસ્ટ, સોનગઢ - ૩૬૪૨૫૦

वास ना शक्ति तो, अल्प भोजन करे।
मैं जजों भाव तैं, कार्य वांछित सरें॥

विरत ऐसे करे, वर्ष तेरह सही।
तथा वर्ष नौ त्रय, विरत कर ध्वनि कही॥

अन्त उद्यापना, या दुगुन व्रत करे।
मैं जजों भाव तैं, कार्य वांछित सरें॥

शक्तिसम द्रव्य ले, फेरि जिन पूजिये।
दीजिये दान पर, भावना कीजिये॥

और घनी विधि जिन, वानि लखि के धरें।
मैं जजों भाव तैं, कार्य वांछित सरें॥

विरत ऐसे किये, कर्म अरि को हरें।
भव्य व्रत धार यों, भावना मन धरे॥

रतनत्रय विरत की, सेव शिवसुख करे।
मैं जजों भाव तैं, कार्य वांछित सरें॥

(दोहा)

रत्नत्रय की सेव कर, रत्नत्रय गुण गाव।
रत्नत्रय की भावना, कर पल पल शिर नाव॥

ॐ ह्रीं श्री सम्यक्रत्नत्रयाय अर्घ्यम्।

इति रत्नत्रयविधानं समाप्तम् ।

Shri Digambar Jain Swadhyay Mandir Trust, Songadh - 364250

શ્રી દિગંબર જૈન સ્વાધ્યાયમંદિર ટ્રસ્ટ, સોનગઢ - ૩૬૪૨૫૦

श्री रत्नत्रय व्रतकथा

(दोहा)

अरहनाथ को वन्दि के, वन्दों सरस्वति पाय।
रत्नत्रय व्रत की कथा, कहूँ सुनो मन लाय॥1॥

(चौपाई)

जंबूद्वीप भरत शुभ खेत, मगधदेश सुख संपति हेत।
राजगृही तहँ नगरि बसाय, राजा श्रेणिक राज कराय॥

विपुलाचल जिन वीरकुमार, केवलज्ञान विराजित सार।
माली आय जनावो देय, ततछिन राजा गमन करेय॥

पूजा बन्दन कर शुभ सार, लाग्यो पूछन प्रश्न विचार।
हे स्वामी रत्नत्रय सार, व्रत कहिये जैसा व्यवहार॥

दिव्यधुनी भगवान बताय, भादों सुदि द्वादशि शुभभाय।
कर स्नान स्वच्छ पटश्वेत, पहिनो जिनपूजन के हेत॥

आठों द्रव्य लेय शुभ जाय, पूजों जिनवर मन-वच-काय।
जीरण नूतन जिनके गेह, बिम्ब धरावा तिनमें तेह॥

हेम रूप्य पीतल के यन्त्र, तांबा तथा भोज के पत्र।
यन्त्र करावहु मन थिर देव, रत्नत्रय के गुण लिख लेव॥

निःशंकादि सुदृग्गुण सार, संशयरहित सुज्ञान अपार।
अहिंसादि महाव्रत सार, चारित के ये गुण हैं सार॥

ये तीनों के गुण हैं आदि, इन्हें आदि जेते गुण वादि।
शिवमारग के साधन हेत, ये गुण धारें व्रती सुचेत॥

શ્રી દિગંબર જૈન સ્વાધ્યાયમંદિર ટ્રસ્ટ, સોનગઢ - ૩૬૪૨૫૦

भादों माघ चैत्र में जान, तीनों काल करो भवि आन।
या विधि तेरह बरस प्रमान, भावन भावै गुणहिं निधान॥

लवंगादि अष्टोत्तर शत आन, जपो मन्त्र मन कर श्रद्धान।
पुनि उद्यापन विधि जो येह, कलशा चमर छत्र शुभ देह॥

संघ चतुविध को आहार, वस्त्राभरण देहु शुभसार।
बिम्बप्रतिष्ठा आदि अपार, पूजो श्रीजिन हो भवपार॥

(दोहा)

इसविधि श्रीमुख धर्म सुन, भन्यो चित्तधर भाय।
कौने फल पायो प्रभु, सो भाखो समुझाय॥२॥

(चौपाई)

जम्बू-द्वीप अलंकृत हेर, रह्यो ताहि लवणोदधि घेर।
मेरु सु दक्षिण दिश है सार, है विदेह तँह वृष अवतार॥

कच्छवती मँह रम्य सुदेश, वीतशोक पुर तहाँ सुवेश।
वैस्रिव नाम तहाँ को राय, करै राज सुरपति सम भाय॥

माली ने जु जनावो दयो, विपुलबुद्धि प्रभु वन में ठयो।
इतनी सुन नृप बन्दन गयो, दान बहुत माली को दयो॥

हे स्वामी रत्नत्रय धर्म, मोसों कहो मिटै सब भर्म।
तब स्वामीने सब विधि कही, जो पहिले सुप्रकाशी सही॥

जिनवरको अभिषेक रु ठयो, फिर पूजा करके सुख लयो।
जागरणादि कियो बहुभाय, इसविध व्रतकर वैस्रिवराय॥

भावसहित राजा व्रत कर्यो, धर्मप्रतीति चित्त अनुसर्यो।
षोडश भावन भावत भयो, अन्त समाधिमरण तिन कियो॥

Shri Digambar Jain Swadhyay Mandir Trust, Songadh - 364250

गोत्र तीर्थंकर बाँध्यो सार, जो त्रिभुवन में पूज्य अपार।
सर्वारथसिधि पहुँच्यो जाय, भयो तहाँ अहमिन्द्र सुभाय।
हस्तमात्र तन ऊँचो भयो, तेतिस सागर आयुष लयो।
दिव्यरूप सुख को भण्डार, सत्य निरूपण अवधिविचार॥
सौधर्मेन्द्र विचारो धरी, यक्षेश्वर को आज्ञा करी।
वेगि नगरि निर्माप्यो जाय, थाप्यो सुथरापुर अधिकाय॥
तहां कुम्भपुर नृपती बसै, देवी प्रजावती तिस लसै।
श्री आदिक तहँ देवी आय, गर्भसोधना कीनी जाय॥
रत्नवृष्टि नृप आंगन भई, पन्द्रह मास सुवर्षत गई।
सरवारथसिधि सों सुर आय, प्रजावती कुक्षी उपजाय॥
मल्लिनाथ शुभ नाम जु पाय, दोजचन्द्र सम बढ़त सुभाय।
जब विवाह मंगल विधि भई, तब विरागता प्रभुचित लई॥
दीक्षा धर वन में प्रभु गये, घातिकर्म हनि निर्मल ठये।
केवल ले निर्वाण सु जाय, पूजा रची सुरन अब आय॥
यह विधान श्रेणिक ने सुन्यो, व्रत लीने चित अपने गुन्यो।
भक्ति विनय कर उत्तम गाय, पहुँचे अपने गृह को आय॥
या विधि जो नर नारी करै, सो भवसागर निश्चय तरै।
नलिनकीर्तिमुनि संस्कृत कही, 'ब्रह्मज्ञान' भाषा निर्मयी॥

।। इति श्रीरत्नत्रयव्रतकथा समाप्त ।।

શ્રી દિગંબર જૈન સ્વાધ્યાયમંદિર ટ્રસ્ટ, સોનગઢ - ૩૬૪૨૫૦

Shri Digambar Jain Swadhyay Mandir Trust, Songadh - 364250